सजी पंचमी फौज बनि ब्रंन एवं। गुरं गष्षरं षग्ग कट्ठै रनेवं॥
बली मरद कंमाल षा बधं सथ्थं। लियै[1] सकत मुन सातकी गुर्ज हथ्थं॥
छं०॥ ६२॥
सजे लष्य द्वै सुभट करि लोह सारं। तहां देषि पाइद्दलं दुष्य जारं॥
तहा पंच हज्जार गट्ठै गयन्नं। सजी पंचयं फौज सा[2] इंद्र वन्नं॥
छं०॥ ६३॥

रणक्षेत्र में दोनों फौजों का बीच में दो कोस का मैदान देकर डटना और व्यूह रचना।

दूहा॥ [2]द्वै दल बीच सकोस द्वै। प्रथीराज कहि बात॥
चौकी चढ़ि चक्रह कटक। दल अरियन करि घात॥ छं०॥ ६४॥
चौपाई॥ चढ़िय सुचक्र सेन चहुआनं। सुबर सूर जोधा परिमानं॥
उत सज्ज्यौ चक्रह सुरतानं। दीसै फौज मनों दधि पानं॥ छं०॥ ६५॥
कटक चक्र रच्यौ सुरतानं। प्रथीराज सज्जिग तिहि थानं॥
परी षबरि कहियौ परिमानं। पंच फौज पंचौ [3]चहुआनं॥ छं०॥ ६६॥
डामर॥ चढ्यौ सुरतान, सुन्यौ चहुआन, तमंकि कटी किरवान कसी।
मय मत्त सुमंत, पढ़े बरं पंत। सहस द्वै सूर, सहस्स असी॥
दस सट्ठि हजार, चले [4]पयदाज, जमाति मु जुग्गिनि जानि हसी।
बर बान कमान, छयौ असमान, अरी मुष संमुह, फौज धसी॥
छं०॥ ६७॥

युद्ध सम्बन्धी तिथिवार वर्णन।

कवित्त॥ ग्यारह सै चालीस। सोम ग्यारसि बदि चतह॥
भए साह चहुआन। [5]लरनं गाढ़े बनि षेतह॥
पंच फौज सुरतान। पंच चहुआन बनाइय॥
दानव देव समान। जवान लरनं रिन धाइय॥

(१) मो.-सावृन्न इन्दं। (२) ए. कृ. को.-द्वै दल कोसह बीच द्वै।
(३) मो.-सुरतानं। (४) मो.-पयदार। (५) मो.-मरन।

कहि चंद दंद दुनिया सुनौ। बीर कहर चचर जहर ॥
जीधान जोध जंगहँ जुरत। उभय मध्य वित्यौ पहर ॥ छं० ॥ ६८ ॥

अनीपत योद्धाओं की परस्पर करनी वर्णन और अग्न्यास्त्र युद्ध।

भुजंगी ॥ प्रथीराज पतिसाह रिन जुरत जोधं। मनों राम रावन्न संभरिय क्रोधं ॥
जुरे षान तत्तार कैमास मंची। दुअं षिष्षि लग्गे दुअं भूप छिची ॥
छं० ॥ ६९ ॥

समं कन्ह षुरसान रिन जुरि क्रपानं। उड़ी षेह षुरयं न सुभ्भंत भानं ॥
गहिल्लौत राजंस गोइंद पानं। उतै धनिय षंधार षां षान षानं ॥
छं० ॥ ७० ॥

चढ्यौ कोपि परचंड परसार जैतं। उतै गष्षरं भ्भाम कंमाल षेतं ॥
छुटै नारि हथनारि बानैत बानं। करै भत्य चहुआन सुरतान आनं ॥
छं० ॥ ७१ ॥

तहां कोपि बाहंत बर तेग राजं। इकं एक ने जे [1]लरै छोह लाजं ॥
इकं एक सेलंत कड्ढंत कोपं। इकं एक जमदड्ढ करि सेइ धोपं ॥छं०॥७२॥

इकं एक फरसी सु कड्ढंत हथ्थं। इकं एक गुरजं लरै सूर बथ्थं ॥
इकं एक हथ्थीय हथ्थी [2]जुरंता। इकं एक सूरं उठैं भू भिरंता ॥
छं० ॥ ७३ ॥

द्वादसी का युद्ध।

दूहा ॥ इम बित्ती एकादसी। होत द्वादसी प्रात ॥
रवि उग्गत सम द्वै लरैं। हिंदू तुरक न्रघात ॥ छं० ॥ ७४ ॥

भुजंगी ॥ कहूं एक न्यारे परैं रुंड मुंडं। उड़ै श्रोन छंछं जरे जानि [3]डुंडं ॥
इकं सूर सेलं करं कड्ढि तेगं। *इकं हथ्थ कम्मान संचत्त वेगं ॥
छं० ॥ ७५ ॥

इकं इक्क हथियार बिन लात घातं। इकं मुष्टिकं मुष्टि किय गात पातं॥
इमं वित्ति मध्यान अस्तिमिति भानं। इकं जम्मदड्ढं लरैं लै जुवानं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

(१) मो.-तरे। (२) ए. कृ. को.-तुरंता। (३) ए. कृ. को.-झुंडं।
* मो.-"इकं अस्व कीनं रिनं वायु वेगं।"

इकं बीर बर बीर बैठे [1]विमानं। इकं सूर सूरं जिरष्यंत पानं॥
इमं जाम द्वै जुद्ध करि रहे ठाढ़े। गुरे [2]धाज गजराज नरराज गाढ़े॥
छं० ॥ ७७ ॥

पृथ्वीराज का यवन सेना में अकेले घिर जाना और चामंडराय का पराक्रम।

कवित्त॥ घेऱ्यौ नृप चहुआन। संग सब सथ्थिय छुट्टौ॥
जंग करै चामंड। षरिग गज भ्रुंडन जुट्टौ॥
बाग लेइ बगमेलि। सेल मैंगल सिर फुट्टौ॥
करन कढ्ढि करिवार। दंत सम भसुंड सु तुट्टौ॥
तुट्टौ सु दंत सम सुंड मुष। रष किन्निय सुरतानं [3]तन॥
दल दंत करत दाहर सुतन। मद वारुन दारुन दलन॥ छं०॥ ७८॥

दूहा॥ कलह राइ चामंड [4]करि। दूह माऱ्यौ गजराज॥
साह गहन कौं मन कऱ्यौ। चल्यौ [5]हांस लै बाज॥ छं०॥ ७९॥

कवित्त॥ गुरि गयंद गोरी नरिंद। चतुरंग दल सज्जिग॥
उर निसान घुंमरिग। आइ उप्पर सिर तज्जिग॥
जहां हक्यौ तहां भिऱ्यौ। तिनह घर नदी पलट्टिय॥
षग्ग ताल बाजंत। सीव तरवर बन तुट्टिय॥
[6]कतरीय पुरष गय घर मुरिग। चंद बरद्दिय इम भन्यौ॥
भाजंत भीर तुष्षार चढ़ि। चौंडराव चाबक हन्यौ॥ छं०॥ ८०॥

चार यवन सरदारों का मिलकर चामंड राय पर आक्रमण करना।

दूहा॥ लाल षान मारुफ षां। हसन षान आकूब॥
च्यार लरे चामंड सौं। षग्ग गहौ तुम षूब॥ छं०॥ ८१॥

---

(१) ए. कृ. को.-गुमानं। (२) मो. राज।
(३) मो.-नन। (४) ए. कृ. को.-काहि।
(५) मो.-हंस। (६) ए. कृ. को.-कसरी।

कवित्त ॥ पूब पमन तहां लाल। बान बरषंत बीर पर ॥
हद्द मरद मारुफ।[1] नेज फेरंत कहर कर ॥
हसन षान सेहथ्थ। षग्ग बाहंत सीस पर ॥
कढ्ढि कटारिय जंग्ग। अंग आकूब इक्क भर ॥
भर भार सह्यौ भुज दुअन पर। दाहिम्मै कीनो समर ॥
कविचन्द कहै बरदाइ बर। कलह केलि भूले अमर ॥ छं० ॥ ८२ ॥
लाल षान दुअ बान। तानि सुरतान आन किय ॥
एक लग्गि हय अंग। एक चामंड बंधि हिय ॥
सकति छंडि मारूफ। जंघ[2] हय उर महि भिद्दिय ॥
हसन षान तरवारि। मारि द्वै घा मुष किद्दिय ॥
आकूब कटारी कढ्ढि कर। घल्लिय चामंडह गरें ॥
सुभ्भिय सुभट्ट संग्राम इम। भगल षेल नट्टह करें ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कैमास का चामंड राय की सहायता करना।

दूहा ॥ च्यारि षान चामंड इक। एकाकी जुरि जोध ॥
अंग अम्म दाहिम्म कौ। भिन्यौ भीम सम क्रोध ॥ छं० ॥ ८४ ॥

चामंडराय का चारों यवन योद्धाओं को पराजित करना।

कवित्त ॥ क्रोध जोध जुरि जंग।[3] अंग चावँडराइ जुरि ॥
षग्ग जग्गि करि रोस। सीस सिप्पर समेत ढुरि ॥
एक घाव आकूब। षूब जस लियौ लोह लरि ॥
हसन मारि कट्टारि। पारि मारूफ मुन्यौ धर ॥
मारूफ मुन्यौ उछ्रयौ हसन। आकूबह सिर धर पन्यौ ॥
सह दूअ आन चहुआन किय। लाल षान रन बिफफुन्यौ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

लाल खां का वर्णन।

दूहा ॥ लाल ढाल ढिंचाल ढिग।[4] लाल बरन हय अंग ॥
लाल सीस सिंधुर धजा। लाल षान किय जंग ॥ छं० ॥ ८६ ॥

(१) ए. कृ. को.-तेज। (२) मो.-हथ।
(३) ए. कृ. को.-इह। (४) ए. कृ. को.-अंग।

कवित्त ॥ लाल बरन बानैतं। षग्ग कढि आन जुद्ध किय ॥
षान षान किय घाउ। कंध कटि गिऱ्यौ तास हय ॥
निरषि राइ चामंड। बिरचि फिरि बीर पचाऱ्यौ ॥
गहिय तेग षां लाल। अग्ग न्रप धरनि प्रछाऱ्यौ ॥
धर डारि रिदय पर पाव दिय। केस गहै बंकुरि करहि ॥
एकध्थ सुनौ हिंदू तुरक। जै जै सुर नारद [१]करहिं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

लाल खां का मारा जाना।

दूहा ॥ लाल षान के केस गहि। सिर धरि करि दुअ षंड ॥
दूसासन ज्यों भीम बल। रन ठढ्ढौ चामंड ॥ छं० ॥ ८८ ॥

कैमास और चामंड राय का वार्तालाप।

कवित्त ॥ रन ठढ्ढौ चामंड। मंचि कैमास पहुत्तौ ॥
[२]हयह चढ़ायौ आइ। बहुरि मुष बचन कहंतौ ॥
तूं मेरौ लघु बंध। इतौ दुष कौन सहंतौ ॥
[३]तो बिन जग सब धंध। अंध हुअ अवनि रहंतौ ॥
चढ़ि बाज आज संग्राम में। राज लाज मो भुजनि पर ॥
हठि हसन षान आकूब से। षल षंडे ते अंग बर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ षल षंडे तुम अंग बर। [४]रगत बरन किय अंग ॥
रहि ठढ्ढौ इक षिनक रन। करौं निरिषि हौ जंग ॥ छं० ॥ ९० ॥

कुंडलिया ॥ कहै राइ चामंड तब। तुम मेरे बड़ भ्रात ॥
क्यों षिची देषै षरै। कलि न अमर इह [५]गात ॥
कलि न अमर इह गात। बान मो मति तिम किज्जै ॥
हम तुम हय हकारि। बंधि सुरतानह लिज्जै ॥
बिरचि मार मचाइ। तबहि गुज्जन पति [६]ग्रहिहै ॥
लरत कित्ति होइ तुरत। तुरकै हिंदू सब [७]कहिहै ॥ छं० ॥ ९१ ॥

(१) मो.-कहिय। (२) मो.-हयानि।
(३) मो.-"तौ बिन जग जनु धंध अंध हुअ अवनि परंतौ।" (४) ए. कृ. को.-रकत।
(५) मो.-घात। (६) ए. कृ. को. ग्रहिये। (७) ए. कृ. को.-कहिये।

कैमास का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ ताज बाज संहबाज षां। जाजं षान महबूब ॥
मान म्रदन कैमास कौ। लगि षुरसानह षूब ॥ छं० ॥ ९२ ॥

कवित्त ॥ सुनत साहि कौं बत्त। सत्त सब मित्त सम्हारै ॥
करत कलह [1]अम्मान। बान कम्मानं प्रहारै ॥
सस्त्र सार की मार। हक्क मंची तहां टेऱ्यौ ॥
जबरजंग नीसान। मनहुं बद्दल घन घेऱ्यौ ॥
जिम पथ्थबान कर बेग गहि। च्याऱ्यौ कैमासह लगे ॥
दिष्षिव सबल संग्राम भर। ब्रह्म जोग निंदह जगे ॥ छं० ॥ ९३ ॥
नीर मीर [2]सक सस्त्र। मंचि कैमास तमकि तम ॥
कर गहि कठिन कमान। बांन बाहंत पथ्थ जिम ॥
जाज षान दुअ बान। तानि माऱ्यौति पऱ्यौ धम ॥
तप्पि बाज सहबाज। मरद [3]महबूब मुरहि किम ॥
अहंकार धर बिमन मह्हि। जाइ जुऱ्यौ चामंड सम ॥
दुअ करत जुद्ध मंची सरिस। लरत घाव दुअ धरिय श्रम ॥छं०॥९४।

मध्यान्ह के उपरान्त सूर्य्य की प्रखरता कम होने पर दोनों दलों में घमसान युद्ध होना।

भुजंगी ॥ धरिय जुद्ध द्वै षरिय बिती मध्यानें। जुरे ज्वान हथ्थं सुबथ्थं जुधानं॥
दलं दोई बीरं बरं जुद्ध बानं। धकं धक्क हक्कंत षेतं सु ढानं ॥छं०॥९५॥
वहै सस्त्र अम्मान कम्मान बानं। गिरैं तथ्थ हिंदू तुरक्कं अघानं॥
करै सूर सूरं सु घावं क्रपानं। इकं तेग लग्गे सु ठट्टे [4]घुमानं ॥
छं० ॥ ९६ ॥
मनौं घुमाई ध्यानं जोगिंद बानं। लरै सूर सामंत जो जाउ मानं॥
जुरै जंम रंगं सु ठट्टै गुमानं। तहां मंचि कैमास महबूब षानं॥छं०॥९७॥
पछै पच्छवानं तता तेज ज्वानं। इसे सुभ्भियै तथ्थलै षग्ग पानं॥

---

(१) मो.-असमान। (२) मो.-सब।
(३) मो.-महमूंद। (४) मो.-गुमानं।

घनं घाव बज्जंत सो है समानं। जुरे बाज सो बाज सम जुद्ध ठानं॥
छं० ॥ ९८ ॥

जुरे च्यार षानं सु चावंड [1]मानं। जुरै अंग अंगं करै अप्प [2]मानं॥
भजै काइरं कलह देषे कपानं। .... छं० ॥ ९९ ॥
रुप्यौं मंच महबूब दुअ जुद्ध थट्टं। तिनं बाहियं उअर नह तेग तुट्टं॥
तबै थरहरे काइरं कंपि नट्टं। तहां ताज षां षान रापंत पुट्टं॥
छं० ॥ १०० ॥

दलं देवता जुद्ध देषे विमानं। तहां देव मिवरंत अछरीय गानं॥
तहां चौसठी करत भरि पच चल्ली। तहां रंभ घालंत गर माल भल्ली॥
छं० ॥ १०१ ॥

तहां स्वांमि कामं [3]लरै हिंदु मीरं। इमं सस्त्र वस्त्रं छुटे तीर तीरं॥
तहां मल्ल जिम लरैं बलवंत श्रौरं। .... छं० ॥ १०२ ॥
तहां लसत धंसतं सुवानं घतानं। जिसे मत्त आमत्त मत्ते मतानं॥
तिसे दरसियं सूर दंतं दँतानं। तहां हथ्थजोरं सु हस्ती हतानं॥
छं० ॥ १०३ ॥

सुभै हाम ठामं परे तुरक झुंडं। तहां हद्द हिंदू भये षंड षंडं॥
तहां करत सरितान में मगर तुंड। .... छं० ॥ १०४ ॥
तहां कच्छ सिर मच्छ फरके भुजानं। तहां केस कुस दंत बगपंति मानं॥
तहां भोर ज्यों भँवर हथ्थूं करारं। तहां क्रूंज कर धार उरधार धारं॥
छं० ॥ १०५ ॥

तहां चक्क चक्की सु सोभंत नैनं। तहां तीसरी नदिय बहिपाद्य ऐनं॥
तहां श्रोन की सरित जल पूर भल्ली। तहां चौसठी पच भरि कुंभ चल्ली॥
छं० ॥ १०६ ॥

द्वादसी का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ चैत प्रथम उज्जास पष। मंगल बारसि सुद्ध॥
कैमासह चामंड सम। किय सहाव बर जुद्ध॥ छं० ॥ १०७ ॥

(१) ए. कृ. को.-समानं। (२) ए. कृ. को.-पानं। (३) मो.-लहै षग्ग बीरं।

दोनों सेनाओं के मुखिया सरदारों का परस्पर तुमल युद्ध वर्णन।

कवित्त॥ घरिय दोइ बर जुद्ध। क्रुद्ध जोधा रन जुट्टे॥
मंचि मिया महबूब। [1]जंग से अंग निहट्टे॥
परिय मीर [2]सिर मार। भार दुअं भुज बर पिल्लै॥
घायत्तन घन घुंमि। चाय पिची षग पिल्लै॥
षग पेल मेल महबूब सिर। कैमासह कर ढारियौ॥
तकि बाज षान बल [3]चंड करि। गहिं गिरदान पछारियौ॥
छं०॥ १०८॥

चिंति राइ चामंड। इतें उत निरषि उभय तन॥
षग्ग करह षनकंत। मंचि सहबाज घाव घन॥
पहुंचि जाज परिहार। धार मीरन सिर बढ्ढिय॥
रन जित्यौ दाहिम्म। कित्ति पहुमी पर चढ्ढिय॥
दल दल्यौ सबल दाहर सुतन। कहै धन्य हिंदू तुरक॥
सुनि बत्त साह संमुह अरिय। जनु असि वर उग्ग्यौ अरक॥
छं०॥ १०९॥

अपनी फौज हारती हुई देख कर शहाबुद्दीन का अपने हाथी को आगे बढ़ाना।

रसावला॥ मत्त मत्तं लरी, मेछ दाहिम्मरी। सेन साहाबरी, ढ्वरिमा संभरी॥
छं०॥ ११०॥

काइरं कंपरी, जुद्ध देषे डरी। जेन पष्पं बरी, तेन धीरं धरी॥
छं०॥ १११॥

षग्ग षग्गें जुरी, सस्त्र कट्टे अरी। रंभ आयं बरी, प्रेम बीरं बरी॥
छं०॥ ११२॥

ईस मालं धरी, [4]ग्रम्म जालंधरीं। राइ चामंडरी, जैत लड्डी घरी॥
छं०॥ ११३॥

---

(१) ए. कृ. को.-जंम। (२) मो.-पर।
(३) ए. कृ. को.-षंड। (४) ए. कृ. को.-ढिल्या।

तेग लग्गी तरी, मेच्छग्रभ्भंटरी । मीर छुट्टै धरी, साहि ढिल्ल्यौ करी ॥
छं० ॥ ११४ ॥

शाह के आगे बढ़ने पर यवन सेना का उत्साह बढ़ना ।

कवित्त ॥ करिय साहि ठेलंत । मीर हक्कंत प्रबल दल ॥
षां ततार रुस्तम्म । मीर मंगोल सबल्ल बल ॥
चक्रसेन चहुआन । लोह बाहंत आय षल ॥
नर हय गय गुंजार । लोह लग्गंत हयद्दल ॥
असि सार धार आकास उड़ि । उठि जुरंत कमंध रिन ॥
चहुआन चक्र सुरतान लगि । तन तिषंड षंडे [1]करिन ॥ छं० ॥ ११५ ॥

शहाबुद्दीन का बान बर्षा करके सामंतों को घायल करना ।

तब सहाब सुरतान । बान कंमान कोपि धरि ॥
अलूषान आलंम । सार बहि [2]कढी सु षुप्परि ॥
चक्रसेन सिर षंडि । कियौ दह भरे लोह लरि ॥
षां ततार रुस्तंम । षांन षुरसान रहै डरि ॥
उर डरपि धरक्कि हिंदू तुरक । सूर नूर सामंत मुष ॥
कविचन्द देषि कीरति करत । लरत अप्प अपनी सु रुष ॥ छं० ॥ ११६ ॥

दूहा ॥ अप्प अपानी रुष लरत करत अंग अँग मार ॥
चक्र सेन चहुआन कौ । भरनि सह्यौ भुज भार ॥ छं० ॥ ११७ ॥

कवित्त ॥ भरनि सह्यौ भुज भार । साह सकबान प्रहारिय ॥
एक बान चामंड । लग्गि भुज दंड मुहारिय ॥
दुतिय बान सिर बहिग । चक्रसेनह सिर संधे ॥
सुकर कढ्ढि अप बान । षंचि बसतर [3]सम संधे ॥
बर बंधि घायक षग्ग गहि । बिजल षान बगसी बह्यौ ॥
कैमास राइ चामंड मिलि । धन्य दुअन जै जै कह्यौ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

---

१) मो. किरन, करन । (२) ए. मो.-कढ्ढि ।
(३) ए. कृ.-सस ।

कैमास और चामंडराय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सरदारों का रक्षा करना।

कैमास रु चामंड। साहि गज तेग प्रहारिय॥
अलूषान आलंम। सीस दुअ घाइन पारिय॥
चक्रसेन षग बहिग। चमर कर सिर सम तुट्टिय॥
बहि क्रपान कासिम्म। [1]लरत धर पर धर लुट्टिय॥
लुट्टैति मीर तिहि साह रिन। छच धार छचिय षगन॥
दाहिम्म जुद्ध दिषि ब्रह्म सुर। भय तुंमर नारद मगन॥ छं० ॥११९॥

चक्रसेन का मारा जाना।

अलूषान धर उठिग। पानि धरि षग्ग षनंक्यौ॥
चक्रसेन कटि कंध। सिलह फुटि तनह ननंक्यौ॥
उमड़ि उट्ठि अधकाइ। घुमड़ि घन घाइ घनंक्यौ॥
तीन भरन किय घाउ। ठाम तिन तनह [2]ठनंक्यौ॥
जुध करत षग्ग तिय जोध सम। चक्रसेन सिर धर पर्‍यौ॥
बोहिथ्थ बीर तरवारि सर। उभय हथ्थ धर [3]रन तिर्‍यौ॥ छं० ॥१२०॥

चक्रसेन का वंश और उसका यश वर्णन।

*धर कर गहि तरवार। हेत हिंभोल सँभारिय॥
चढ़त साहि ढिग सज्जि। बाज सिर ताज बिहारिय॥
सचह बरस सपन्न। राय बाहर कौ जायौ॥
कलिजुग जस विस्तरिय। बहुरि बैकुंठ सु आयौ॥
बिन सिर कमंध करिवार गहि। षगन [4]मारि षल षंड किय॥
मार्‍यौ मीर [5]जद्दव मलिक। बीर परे पारंत बिय॥ छं० ॥१२१॥

त्रयोदशी बुधवार को पृथ्वीराज की जय होना।

(१) मो.-लगन। (२) ए. कृ. को.-तंक्यौ।
(३) ए. कृ. को.-रत रिन्यौ। * मो.-धर तर कर करिवार। (४) मो.-सार।
(५) ए. कृ. को.-जब दल।

दूहा ॥ त्रयोदसी सुदि चैत की। गयौ लरत बुधबार ॥
समर साह चहुआन सम। भर आरथं किय मार ॥ छं० ॥ १२२ ॥
भुजंगी ॥ भरं भारथं कीय तिन बेर बीरं। जुरे संभरी साहि सिरदार श्रीरं ॥
नरं काइरं झम्मखे भग्ग भीरं। चढ़ौ मीर मारूफ मुष नीर धीरं ॥
छं० ॥ १२३ ॥
तहां च्यारि बंधौ भए एक सूरं। लगे मंच कैमास दिष्षै करूरं ॥
लगे बान कंमान फुट्टै परारं। कियं छिन्न सन्नाह देही विहारं ॥
छं० ॥ १२४ ॥
तहां राग मारू बजै तबल तूरं। घुरै घोर नीसान ईसान दूरं ॥
तहां षान हिंदवान भए चक्र चूरं। तहां हूर रंभा बरै बरह सूरं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
तहां मेछ भग्गे भए प्रात तारे। तहां मंचि कैमास जित्यौ अषारे ॥
छं० ॥ १२६ ॥
दूहा ॥ जित्ति मंचि सुरतान घर। बंधव चौंड हजूर ॥
उभै लष्ष असुरान के। मेटि प्रबल दल पूर ॥ छं० ॥ १२७ ॥

कैमास और चामंडराय का शहाबुद्दीन को दो तरफ से दबाना और उसके हाथी को मार गिराना।

कवित्त ॥ मेटि प्रबल दल पूर। साह संमुह गज पिल्ल्यौ ॥
बाज राज चामंड। मंचि बंधव मिलि ठिल्ल्यौ ॥
संगि बाहि कैमास। पीत बाने बिच थट्टिय ॥
गहिय समर चामंड। तुंड परं करिय निहट्टिय ॥
कट्टिय सु सुंड गज दंत सम। गिरत गज्ज साहाब धर ॥
दाहिम्म गह्यौ गज्जन असुर। जय जय सुर सद्द अमर ॥छं०॥१२८॥
चौपाई ॥ प्रथीराज जित्यौ परगासं। साह सहाब ग्रह्यौ कैमासं ॥
सचह षान परे चिहु पासं। जै जै सबद भयौ आयासं ॥छं०॥१२९॥

दोनों भाइयों का शाह को पकड़ कर पृथ्वीराज के पास लेजाना।

कवित्त ॥ अमर सद्द जयकार। डारि साहाब कंध हय ॥
लै मंचौ सुरतान। बंधि बिय राज पास गय ॥

दिष्षि न्रपति साहाब । ताम अप्पन हिय डरयौ ॥
किय हुकम्म चहुआन । आनि सुष्यासन धरयौ ॥
न्रप जीति चल्यौ दिल्ली पुरह । उप्पाऱ्यौ चामंड बर ॥
ढुंढयौ षेत दाहिम तहां । उप्पारिग केइक सुभर ॥ छं० ॥ १३० ॥

कैमास का रणाक्षेत्र में से घायल और मृत रावंतों को ढुँढ़वाना ।

उप्पारिग चहुआन । राज बंधव सु चक्रधर ॥
रामकिन्न गहिलोत । बंध रावर सु समर बर ॥
उप्पारिग नरसिंघ । बीर कैमास अनुज्जिय ॥
सामल सेषा टांक । नेह जंजरिय बंध बिय ॥
उप्परि षेत सामंत षट । षट्टपुर भारथ परिग ॥
दल हिंदु सहस असुरह अयुत । रहे षेत कंदल करिग ॥ छं० ॥ १३१ ॥

रण में मृत्यु होने की प्रशंसा ।

दूहा ॥ जे भग्गे तेज मरे । तिन कुल लाइय षेह ॥
भिरे सु नर गय जोति मिलि । बसे अमरपुर तेह ॥ छं० ॥ १३२ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर सुलतान को छोड़ देना और वह दंड सामंतों को बाँट देना ।

कवित्त ॥ गय ढिल्ली प्रथिराज । दंड सुरतान सीस किय ॥
गज द्वादस दल सोभ । बाज हज्जार अट्ठ दिय ॥
अरध दंड प्रथिराज । दियौ कैमास चौंड मिलि ॥
दंड अरध दिय राज । सुभर उप्पारि मंझ रिन ॥
पतिसाह गयौ गज्जनपुरह । रह्नाइय सामंत बर ॥
जै जै सु सबद सब लोक किय । चंद अष्षि कीरति अमर ॥ छं० ॥ १३३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके षट्टू बन मध्ये कैमास पातिसाह ग्रहनं नाम तेंतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४३ ॥

अथ भीम बध समयौ लिष्यते ।

(चौंवालिसवां समय।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर शोक करना और सिंघ प्रमार का वीर वाक्यों से धैर्य्य देना ।

दूहा ॥ उर अड्डौ भीमंग न्रप । नित्त षटक्कै घाइ ॥
अगनि रूप प्रगटै उरह । सिंचै सचु बुझाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

पिता बैर सिर संसहै । अरु रमनी रस रंग ॥
दिन दिन सो जल श्रोन सम । पियै सचु अनभंग ॥ छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज । भीम सोमेस सद्धि रन ॥
हरि हरि मुष उच्चार । किन्न प्रथिराज सुभट गन ॥
करत दुष्प चहुआन । बरजि पंमार सिंघ तहां ॥
आदि ध्रंमं (१) षिचीय करे संताप तात कहां ॥
षग धार षंडि तन मंडि जस । तब सुर लोकह संचरै ॥
आजानबाह अवनीस सैंमे । आबू वै इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज प्रति सिंह प्रमार के बचन ।

कहै सिंघ पामार । बत्त चहुआन चित्त धरि ॥
गुज्जर धर उज्जार । पारि प्रज्जारि छार करि ॥
सोमेसर सुरलोक । तोहि संभरिय लज्ज भुअ ॥
कितक बत्त चौलुक्क । किंमं सु ऋंगमय जुद्ध तुअ ॥
सुरतान भूमि कंकर जहां । तहं थानौ मंडौ भलौ ॥
तुछ सुभट संग करि विकट घट । पुन अप्पनं ग्रेहां चलौ ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) मो.-छत्रिय ।

पृथ्वीराज का पिता के नाम से अर्घ देकर दान करना और पितृ वैर लेने की प्रतिज्ञा करना।

दूहा॥ स्नान सलिल अंजुलि करिय। पुनि सु पिंड दै तात॥
सहस धेन संकलप करि। ग्रंथौ कथ्य ब्रतांत॥ छं०॥ ५॥

कवित्त॥ कहै राज प्रथिराज। [1]सुनहु सामंत सूर [2]सम॥
जो निरमान भवस्य। सोई संपजै क्रंमक्रम॥
जदिन भीम संग्रह्यौ। सोम उग्रह्यौ तदिन रन॥
जोगिनि बीर बेताल। करौं संतुष्ट [2]चपति तिन॥
घृत छंडि पाग्र बंधन तजिय। सजिय अप्प संभरि दिसह॥
अवतार भूत दानव प्रबल। अगनि अंग प्रज्वलि रिसह॥छं०॥६॥

गाथा॥ जाइ संपते सूरं। ग्रेहं ग्रेह अप्प अप्पानं॥
पिष्पिय नैरवि रूपं। भूपं बिना दुब्बलं [3]सहरं॥ छं०॥ ७॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का सब सामंत और सैनिकों की सभा करके अपने बैर लेने का पण उनसे कहना।

दूहा॥ भूमि सयन प्रथिराज करि। निसा बिहानी निट्ठ॥
[4]अरुन समै उद्योत हौं। मंडि सभा सुभ बिट्ठ॥ छं०॥ ८॥

पद्धरी॥ बोले सु कन्ह चहुआन राइ। [5]आनंद चित्त सब बैठि आइ॥
कर जोरि सभा सब उठ्ठ ताह। नरनाह बिरद [6]छज्जंत जाहि॥छं०॥९॥

चष पटी रहत जिन रत्ति दीह। बज्जंग अंग [7]संगर्‍यौ सीह॥
तन तच्छ तुच्छ ह्वै घट्ट घुम्मि। तब बीर सूर सोमेस भुम्मि॥
छं०॥ १०॥

---

(१) मो.-सत्र। (२) मो.-नृपति।
(३) ए. कृ. को.-सहरैं। (४) मो.-असन।
(५) ए. कृ. को.-आदर अनंत, ए.-आइर अनंत। (६) ए. कृ. को.-सज्जंत।
(७) ए. कृ. को.-संकर्‍यौं।

फुनि आइ जाम जद्दव नरिंद। जमनेस भेम वज्जंग ज्यंद ॥
वलिभद्र आइ कूरंभ देव। बहु भंति भूअ जिन करत सेव ॥छं०॥११॥
पुंडीर आइ तहां चंद वीर। सम इष्ट इष्ट शृंगार श्रीर ॥
अतताइ आइ चहुआन चंड। जनु भीम भयानक सभा पंड ॥
छं० ॥ १२ ॥

लंगरी राव तहां बैठि आइ। जगि जुद्ध समै जनु अगनि वाइ ॥
गहिलौत आइ गोइंद राउ। पर भूम भूम देयंत दाउ ॥ छं० ॥१३॥
लघु दिग्घ सूर सामंत सब्ब। बैठे जु आइ दरबार तब्ब ॥
फुनि चंद चंड [1]बरदाइ आय। जिन प्रसन देव द्रुग्गा सदाय ॥
छं० ॥ १४ ॥

प्रथिराज कही [2]सब्बहि सुनाइ। सोमेस भीम जिम सम उपाइ ॥
सजि सेन जुरौ गुज्जर नरिंद। षनि षोदि [3]कढ़ौ चालुक्क कंद ॥
छं० ॥ १५ ॥

अप्रमान बत्त भीमंग कीन। जिम जीति जुद्ध सोमेस लीन ॥
गर्भनौं गर्भ कढ्ढौं नरीन। प्रथिराज नाम तौ विप्र दीन ॥ छं० ॥१६॥
जहां जहां निसंक बंके मवास। षनि षोदि डारि दीजै अवास ॥
छं० ॥ १७ ॥

ज्योतिषी का गुजरात पर चढ़ाई के लिये मुहूर्त साधन करना।

दूहा ॥ करि प्रनाम सामंत सब। बोलिय जोतिगराइ ॥
सद्धि महूरत चढ्ढियै। जिम अग्गै [4]जीताइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
व्यास आन दिष्षिय लगन। घरी महूरत जोइ ॥
इन समयै जो सज्जियै। सही जैत तौ होइ ॥ छं० ॥ १९ ॥
हक्कार्‍यौ जगजोति न्रप। कह्यौ महूरत सद्धि ॥
जीति होइ सद्धों बयर। सिंचो अग्गि समद्धि ॥ छं० ॥ २० ॥

ज्योतिषी का ग्रह योग और सुदिन मुहूर्त वर्णन करना।

(१) मो.-दरबार। (२) मो.-सबन।
(३) ए.-चढ़ौं। (४) ए. कृ. को.-जैपाय।

कवित्त ॥ केंद्रीय ससि सोम। भोम पंचम अधिकारिय ॥
राहु बीर अष्टमो। [1]वक्र सत्तम सुद्वारिय ॥
जंगम थावर धरिय। हलिय तिन नाम सेन भर ॥
कहै विप्र प्रथिराज। राज पंचम पंचम गुर ॥
[2]मन काम होइ सो किज्जियै। अरि जित्तह पड़र दिवस ॥
पिट्ठीय पवन रष्यै महन। तौन बसाइय काल बस ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ रैनि परै संमुह अरिग्र। चक्र जोगिनी अग्ग ॥
दई होइ दुज्जन सयन। तौ तन भग्गै षग्ग ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ कहै व्यास जगजोति। राज चहुआन प्रमानिय ॥
गुज्जर गुज्जर सयन। बैर सोमेसर ठानिय ॥
एक लष्य आरुहहि। लष्य लष्यन षग रुंधहि ॥
होइ जैत चहुआन। पानि भीमंग सु बंधहि ॥
[3]गुजरात होइ तुअ ग्रेहनिय। एक बत्त संमुह मंडौं ॥
जो मिटै बत्त इह जोग कोइ। तौ हथ्थह पचौ छंडौं ॥ छं० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज का लग्न साध कर अपनी तय्यारी करना।

दूहा ॥ विक्रम अरु चहुआन न्रप। पर धुरती सकबंध ॥
असम समै साहस [3]हसह। हिंदुराज दुअ कंध ॥ छं० ॥ २४ ॥
चढ़ि चल्लिय सज्जौ सयन। बोलि अत्य प्रथिराज ॥
लगन महूरत सद्धि कै। बज्जि निसान अवाज ॥ छं० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ जित्ति राज बर साज। बीर बीरह रस सज्जिय ॥
विजे जिति विजैपाल। सोइ राजन जस [4]छज्जिय ॥
तर उतंग इल [5]मूल। भूप [6]बल्लिय चित चढ्ढिय ॥
जय जय जय उच्चार। देव दानव नर पढ्ढिय ॥
सामंत गत्ति साध्रम्म धर। उद्धारन बर बैर षल ॥
चहुआन सज्जि चालुक्क पर। बीर बीर बढ्ढे [7]सबल ॥ छं० ॥ २६ ॥

(१) मो.-मम। (२) ए. कृ. को.-हुअ गुज्जर। (३) मो.-करान।
(४) ए. कृ. को.-सज्जिय। (५) ए. कृ. को. रूप।
(६) ए.-चाल्लिय। (७) ए.-सकल।

गाथा ॥ इच्छिनि अच्छित मानं । वितीतं जाम भग्गयो नथ्यं ॥
अरुनोदय चहुआनं । म्रगया आइ पच्छिमं थानं ॥ छं० ॥ २७ ॥

पृथ्वीराज का शिकार के मिस पश्चिम दिसा को कूच करना।

कवित्त ॥ सां म्रगया चहुआन । राज सज्जी दिसि पच्छिम ॥
सब सेना जानी न । राज एकंग सु अच्छम ॥
आषेटक सजि बीर । भयौ अरुनोदय जोगं ॥
चिहूं दिसिन संभरिय । सेन सज्जी मति भोगं ॥
जित्त गित्त फौजन हलिय । चलिय सूर सामंत बर ॥
संपत्त जाइ चहुआन कों । निड्डुर करिय जुहार सिर ॥छं०॥२८॥

राजा के साथ सैन्य सहित निड्डुर राय का आन मिलना।

दूहा ॥ निड्डुर मन संजुरि सयन । मिलिय आन प्रथिराज्ज ॥
[1]मनु टिड्डिय धरि उल्लटिय । कै चिकूट पर कप्प ॥ छं० ॥ २९ ॥
पंच सबद बाजे गहिर । घन घुंमर बरजोर ॥
जंग जुझाऊ बज्जिया । बढ्यौ श्रवंनन सोर ॥ छं० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज की तय्यारी का वर्णन, भीमदेव को इसकी खबर होना और उसका भी तैयारी करना।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ राज प्रथिराज सेन । कपि चले कोपि जनु लंक लेन॥
जनु उदधि उलटि छंडिय मजाद । दहवट्ट करन गुज्जर प्रसाद ॥
छं० ॥ ३१ ॥
चर चरत चरित जंगल नरेस । बढ़ि चले मध्य भीमंग देस ॥
सब षबरि कही भीमंग जाइ । सजि सेन सूर चहुआन आइ ॥
छं० ॥ ३२ ॥
सामंत नाथ सामंत जोर । बढ्ढे कि जानि दरिया हिलोर ॥
चौसठि हजार परिमान [2]तेह । अनभंग जंग बढ्ढे बलेह ॥छं०॥३३॥
घ्रत तज्यौ पान चहुआन राइ । चिंतै सु चित्त बल विषम घाइ ॥

(१) मो.-ज्यों । (२) मो.-तेन, बलेन ।

चहुआन कन्ह गोयंदराइ। सिव सीस उदक छंड्यौ रिसाइ ॥
छं० ॥ ३४ ॥

बर भरे अन्य भट घट [1]अभंग। अप अप्प विहसि सिर लगिन भंग॥
अप्पान बंध अप करौ राइ। जिम जुरी षग्ग षल [2]विषम घाइ ॥
छं० ॥ ३५ ॥

सब कही षबर सो सुनौ दूत। [3]झलहलिय रोस जैसिंह पूत ॥
फरकंत बांह थरकंत कंध। चष [3]चढ़ि कपाल भुअ हुअ असंध ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बुल्लाइ सब्ब भर राजकाज। सम कह्यौ जुद्ध तिन करन साज ॥
परवान फट्ट देसान देस। तिन के सु चढ्ढि आए नरेस ॥छं०॥३७॥

दुअ सहस षान तेजी पठान। हयनारि धारि सँग कुहकवान ॥
चढ़ि कच्छ देस कच्छी बलान। हय सहस तीन पष्षर पलान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

चढ़ि सहस डेढ़ सोरठ्ठ ठाट। तिन सहस विषम अवघट्ट घाट ॥
चढ़ि काकरेंच कोली करूर। कमनेत कहर अन भूल रूर ॥
छं० ॥ ३९ ॥

चढ़ि झालवारि झाला अभंग। तिन लरत लोह रवि उगिन भंग॥
चढ़ि मचि [4]मुकुंद्ध कावा नरेस। तिन चढ़त सुनत उड़ि जात देस।
छं० ॥ ४० ॥

चढ़ि कठ्ठवार कठ्ठी नरिंद। तिन सचु सुष न दिन राति न्यंद ॥
लघु दिग्घ और को गनै देस। इतने कटक्क आए असेस ॥
छं० ॥ ४१ ॥

चढ़ि सुभट और गुर [5]गुरज षंड। जनु [6]जुरन जुद्ध कुरु षेत पंड ॥
छं० ॥ ४२ ॥

भीमदेव की तय्यारी का समाचार पृथ्वीराज को मिलना।

(१) मो.-अनंट। (२) मो.-झलहलत।
(३) ए. कृ. को.-चढ़ि। (४) मो.-कुद।
(५) ए. कृ. को.-गुजर। (६) ए.-जुरत।

दूहा ॥ चढ़े देषि चालुक्क दल । बहुरे संभरि दूत ॥
भेष दिगंबर दुति तनह । जे अवधूत न धूत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
गनि गैनिका कविचंद की । ठग विद्या परवीन ॥
दूत भूत अनभूत मन । नवनि राज तिन कीन ॥ छं० ॥ ४४ ॥
गाथा ॥ संमुष पिष्षिय राजं । बुल्ले बयन सुहित्त सुभाजं ॥
चढ़ि चालुकी गाजं । नर भर समुद उलटि जनु पाजं ॥छं०॥४५॥
दूहा ॥ एक लष्ष सेना सकल । अकल कलौनह जाइ ॥
इक्क सहस मद गज करी । दिष्षिय जानि बलाइ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज की प्रतिज्ञा ।

कवित्त ॥ इम भंजो भीमंग । जुद्ध जौ.माहिं जुरै रन ॥
ग्रीषम [1]पवन सहाय । दंग जरि जात सघन घन ॥
इम भंजो भीमंग । भीम कुरुनंद पछारिय ॥
यों भंजो भीमंग । सगति महिषा सुर मारिय ॥
इम जुरों जुद्ध भौमंग सम । अगनि तेज वायं हिता ॥
प्रथिराज नाम तद्दिन धरौं । उदर फारि कढ्ढौं पिता ॥छं०॥४७॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते हुए आगे बढ़ना ।

दूहा ॥ आषेटक खेलन चल्लिय । क्रूरिय पंति भर साज ॥
चावद्दिसि बन बिंटि कै । मद्धि संपतौ राज ॥ छं० ॥ ४८ ॥
*अरिल्ल ॥ मन इच्छा आषेटक लग्गिय । षग पंती मन मभभह जग्गिय ॥
जमुन विहड़ बिंटिय बहु बंके । भाल्लि सिंह वाराहन हंके ॥छं०॥४९॥

पृथ्वीराज का गहन बन में पड़ाव पड़ना ।

दूहा ॥ जमुन बंड बंके विषम । हंकत पत्तिय संझ ॥
जो जहां हूंतौ.सो तहां । हुअ.डेरा बन मंझ ॥ छं० ॥ ५० ॥
सूर उदय जे [2]बढ़ि हुते । उत्तरि संध्या सूर ॥
अन्न पान पहुंच्यौ सकल । कहा नौरे कहा दूर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जनों पचमं । * मो.-मुरिल्ल ।
(२) ए. कृ. को.-चढ़े ।

हुकम नकीबत कह फिरै। डेरा डेरा गाहि ॥
जो जिय ज्ञा ढिगै निकरै। राज न पिच्छै ताहि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

कैमासादि सब सामंतों का रात्रि को राजा के पहरे पर रहना।

गाथा ॥ उत्तरि सेन सुराजं। निद्रा छुभित सब्ब सेनायं ॥
पासं न्रप कयमासं। सो सुत्ते पग्ग बंधाइं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
यों सुत्ता सब सेनं। सा निद्रा चंपियं बीरं ॥
मोह चंपि विग्यानं। [1]निद्रा ग्यान [2]नट्ठियं कालं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

कवित्त ॥ राज पास कैमास। कन्ह कनक्क सब्बूरा ॥
सबर सूर पांमार। जैत साहिब अब्बूरा ॥
[3]सलष अलष पुंडीर। दई दाहिंम चामंडं ॥
*सागुर गुर सिरमौर। राज हंमीरति षंडं ॥
सारंग सूर कूरंभ बलि। बर पहार तूंअर सुभर ॥
लंगरीराव लोहान बर। गहिग सेन बर बीर पर ॥ छं० ॥ ५५ ॥

एक पहर रात्रि रहने से शिकार किया जाने की सलाह।

जाम एक निसि पच्छ। बत्त आषेट विचारिय ॥
सुनौ सब्ब सामंत। मंत्त इह चित्त सु धारिय ॥
जंत जीव जग्गै न। तंत क्रम सिद्ध न होई ॥
पुब्ब श्रवन संभव्यौ। निगम [4]जंपे बर लोई ॥
चिंतयौ चित्त चिंता सुमन। मास तीय तिय सह सुनि ॥
निरवान राज प्रथिराज गुन। [5]सुबर सगुन बज्जे सु धुनि ॥
छं० ॥ ५६ ॥

कन्ह का रात्रि को स्वप्न देखना और साथियों से कहना कि सवेरे युद्ध होगा।

(१) को.-निज। (२) ए. कृ. को.-नट्टियं।
(३) ए. कृ. को.-एकल।
* मो.-"सागर गुर सिर मौर राज संभीरति षंडं"।
(४) ए. कृ. को.-चंपे। (५) मो.-सुगुर सुबन।

अरिल्ल ॥ इहै चित्त चिंती चहुआनं। बर मासत्ति सह सुनि कानं ॥
घरी अड्ड अड्ड निरमानं। कहै बीर कन्हा चहुआनं ॥ छं० ॥ ५७ ॥

दूहा ॥ प्रात प्रगट बत्ती कहिय। आगम चिंति प्रमान ॥
सुबर क्राल बित्ती घरिय। कलह परै परयान ॥ छं० ॥ ५८ ॥

गाथा ॥ श्रवनं [1]सुनि सामंतं। रत्तं आचिज्ज मत्तयं [2]युद्धं ॥
आगम होइ प्रमानं। भूकंपं [3]पकयं षंडं ॥ छं० ॥ ५९ ॥

मुरिल्ल ॥ कालं सुचंपि कालं कराल। इन सगुनं सूर आवत्त ताल ॥
आमुभ्भक्ष सुभभक्ष नंजिय प्रकार। बर बीर भीर बिस्तार भार ॥
छं० ॥ ६० ॥

स्वप्न का फल।

दूहा ॥ कहिग सूर सामंत सब। कहि आगम सत काज ॥
सिंघ दीप दुज्जन भिरन। मरन सु अरि प्रथिराज ॥ छं० ॥ ६१ ॥
जिहित सूर सोमेस हनि। सोइ सगुन रन भीम ॥
सोई सगुन र सद्दियै। काल न चंपै सीम ॥ छं० ॥ ६२ ॥

सबेरे कविचन्द का आशीर्वाद देना और राजा का स्वप्न कथन।

अरुन उदै जग्गो न्रपति। निकट भट्ट सिरनाइ ॥
सरन कमल थल भरन सुष। फूले आनंद पाइ ॥ छं० ॥ ६३ ॥

चौपाई ॥ मुदत कमोदनि उदयति भानं। बिसत बसंमति अभ्भत थानं ॥
को चंपै कै मरन जरूरं। यों मत मंत विमंत करूरं ॥ छं० ॥ ६४ ॥
चढ़ि पति घट्टि सु सब्ब रसालं। अर वरि धीर अरं वरि भालं ॥
जिते सगुन दिषि रत्ति प्रमानं। तिते कहे चक्रित चहुआनं ॥
छं० ॥ ६५ ॥

दूहा ॥ संभरि रा संभरि सुकथ। सगुन सु प्रातय राज ॥
कछु सगुन्न निसि उच्चर्यौ। सुनहु सु जंपहु कांज ॥ छं० ॥ ६६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुर। (२) ए. कृ. को.-सूरं। (३) मो.-कीनयं।

कहै सब्ब पयलग्गि भर। भर निहचै सामंत ॥
जु कछु राज्ञ दिष्षौ नयन। जंपि झंपि बर कंत ॥ छं० ॥ ६७ ॥

गाथा ॥ सो संघौ निसि सद्दं। बद्दे कन्ह तीनयो सद्दं ॥
नं जानय किंमानं। परिमानं किंनयं होइं ॥ छं० ॥ ६८ ॥

राजा के स्वप्न का फल।

चोटक ॥ दिन सद्द सगुन्नन भद्द घरी। कलहंत विषंमति बीर भरी ॥
कलि कारन मोकलि वानि रसं। घरि एक घरी महि जुद्ध रसं ॥
छं० ॥ ६९ ॥
भय [1]व्रत्त भयानक बीर भटं। कलहंत कलेवर बीर घटं ॥
छं० ॥ ७० ॥

दूहा। कलह कलेवर बीर घट। सगुन सु हत्तिय पान ॥
सुबर राज बट्टै विषम। देवासुर जु समान ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह के ज्ञानमय वचन।

नको जियत दिष्षौ नयन। न को मरत दिष्षान ॥
मात गरभ आवन [2]गमन। कर नंच्यौ बंधान ॥ छं० ॥ ७२ ॥
[3]धंधौ नट्ट सुभट्ट भ्रम। जस अपजस लभ [4]हानि ॥
जिन जिन जुरि धर नष्षयौ। सों दुरजोधन जानि ॥ छं० ॥ ७३ ॥
सो दुरजोधन जोधवर। सग्गुन बंधिय पान ॥
सुई अग्र नन भूमि दिय। बर भारथ्थ प्रमान ॥ छं० ॥ ७४ ॥

पृथ्वीराज का सेना सहित शिकार करना, बन की हकाई होना।

गाथा ॥ बर भारथ्थ प्रमानं। जानं जुद्धाय बीतयौ घटयं ॥
अव्रत व्रत्तं चारौ। सगुनानं लभ्भियं पारें ॥ छं० । ७५ ॥

मुरिल्ल ॥ चढ्ढिय पत्ति घटि आवरि सूरं। सुघट घटय जमुना जल पूरं ॥
पथ इंदय अवत्ति पति सूरं। मयत्ति काल विग्यानति सूरं ॥छं०॥७६॥

दूहा ॥ सुर विग्यान विग्यान पति। भयति भयंतर जुद्ध ॥
कानन बीर सु हक्कयौ। सुबर बीर गुन सुद्ध ॥ छं० ॥ ७७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-भ्रत्य। (२) ए. कृ. को.-जनम।
(३) मो.-बन्धौ। (४) ए. कृ. को.-भांन।

बन हंकन न्रप हुकम भय। जहँ तहँ गज्जत सूर॥
तबल तूल चंबक चहिय। कह नीरे कछ दूर॥ छं०॥ ७८॥
घुंघर गज घंटानि धुनि। हय गय हस मह लच्छ॥
सयन सब्ब सोवत जगिय। कानन हांकिय पच्छ॥ छं०॥ ७९॥

बन में खर भर होते ही एक भूखे सिंह का निकलना।

कवित्त॥ छुटत तीर चिंहु पष्य। सह बज्यौ सु सूर घन॥
सिंह सह पर सह। बज्जि पर सह मत्त पन॥
रद विमंह गज भङ्ग। बान भग्गे मन आररि॥
हाइ हाइ आरिष्ट। दिष्ट लग्गे पति गारुरि॥
गौमत्त भूत पंचाप नय। कानन पत्ति कानन भुकिय॥
कोई सु भज्जि मूलन रजिय। जत्ति काल कालह बकिय॥छं०॥८०॥
दूहा॥ सिंघ छुधित निद्रा ग्रसित। सिंघनि सिसु ग्रह पथ्य॥
काल नाग नागिन जग्यौ। बर बीरां रस हथ्य॥ छं०॥ ८१॥

सिंह का वर्णन।

पद्धरी॥ भाल्यौ सु सिंघ इक षेल वार। हूतौ सु मद्ध कंदर लवार॥
लद्धी सु वास नर निकट जानि। ग्रज्ज्यौ सु गर्ज्ज नभ घोर वानि॥
छं०॥ ८२॥
पुच्छिय पटक्कि मंडिय सु सीस। बक्कारि उंच सिर दुदस दीस॥
छुट्टंत भाल जुगनेन दीस। चाटंत मुच्छ रिस अधिक हीस॥छं०॥८३॥
तिष्षे सु जोर जमदट्ठ वंत। फट्टंत ध्वरनि हथ्थल तुरंत॥
हथ्थीन सीस नष हनि तुषार। देषंत दंत जनु काल धार॥
छं०॥ ८४॥
सिंघनि सु पास ससि दोइ तथ्थ। लीनौ सु घेरि सामंत सथ्थ॥
छं०॥ ८५॥

सिंह का कन्ह के ऊपर झपट कर वार करना।

कवित्त॥ झपटि लपटि जनु अग्ग। कन्ह दिसि किन्न लटक्किय॥

अतुल पाइ बल अतुल। अग्गि जनु जग्गि भटक्किय॥
जाजुल्लित गंभीर ^(१) गरुअ सद्दह उच्चारिय॥
हाइ हाइ आरिट्ठ। राज हुक्कम बक्कारिय॥
असवार चूकि चप्पौति हय। करि कुंडल कम्मान रजि॥
नर नाह वाह अवसान फबि। परिय बथ्थ नर अत्र तजि॥
छं० ॥ ८६ ॥

कन्ह का सिंह का सिर मसक कर मार डालना।

इत सु कन्ह उत सिंघ। जन्ह जुग जानि प्रलै बर॥
दुअ दंतिन दल दलन। दुअह जम जोध अडर डर॥
कंध कष तिन चंपि। कन्ह कढ्ढिय कट्टारिय॥
पेट फारि धर डारि। फेरि पग भूमि पछारिय॥
सिर फट्टि भेज भेजिय उडिय। हड्ड मंस नस भूर हुअ॥
जय जय सु सद्द यह भूमि भय। बलि बलि कन्ह नरिंद भुअ॥
छं० ॥ ८७ ॥

भंज्या सिंघह सूर। कन्ह जंगह चहुआनं॥
भयौ नूर मुष सूर। सगुन लद्धौ परिमानं॥
उच्छांइ सेन सजि राज। गुज्ज बुभ्भौ न महूरति॥
कूच कूच उप्परे। देस पट्टन धर चूरति॥
आकास मध्य तारा तुटै। यों तुट्टौ अरि सेन पर॥
कल मलत सेस काइर कंपत। कौजहि उज्जर जारि धर॥
छं० ॥ ८८ ॥

कन्ह के बल और उसकी वीरता की प्रशंसा।

गाथा॥ सूरं किरन प्रकारं। सारं मार जुद्ध मय मत्तं॥
कै देवत्त विछुट्टा। कै ^(२)जुट्टा काखयं करनी॥ छं० ॥ ८९ ॥

अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर सामंतों सहित राजा का आगे कूच करना।

(१) मो.-सु। (२) मो.-तुट्टा।

कवित्त ॥ सज्जि मिलइ सामंत । मत्त मत्ते जनु चल्लिय ॥
[1]सो चौसठ्ठि हजार । भार भारथ्थ ह्वै हल्लिय ॥
चामर छत्र रपत्त । छत्र दीनौं सिर कन्हं ॥
छुट्टियि पट्टिय झंपि । बिरद नरनाह जिनन्हं ॥
सेनाधि पत्ति कन्हा कियौ । अग्ग फौज प्रथिराज बर ॥
पचछली फौज निढ्ढुर बलियं । ता पच्छैं पंमार भर ॥ छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ कूच कूच जिम जिम चले । तिम तिम छंडत मोह ॥
ज्यों [2]बंच्यौ दुज राज ने । तिथि पचानइ सोह ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कूच के समय पृथ्वीराज की फौज का आतंक वर्णन ।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यो राज चहुआन सूर । दैवत्त वाह दुज्जन करूर ॥
गुज्जर नरेस पट्टन प्रवास । दल बढ़ै राज जंगल सु चास ॥ छं० ॥९२॥
कलमलिय काय कंकइ कठोर । * सारथ्थ किन्न सम राज जोर ॥
करि गिरद सेन सज्जी सभंति । मानौं कि भांति किरनाल पंति ॥
छं० ॥ ९३ ॥

कलमलित कमठ भर पिठ्ठ भूमि । सल सलित सेस सामंत भूमि ॥
हलमलत ग्रव बंकै मेवास । पल भलत पंथि सम सहि न चास ॥
छं० ॥ ९४ ॥

चल मलत रैन सुझ्झै न पंथ । भल मलत सूर जनु समय अंथ ॥
नल टलत चित्त काइर सु संक । गल बलत सूर जनु कप्पि लंक ॥
छं० ॥ ९५ ॥

नल कलत अश्व रह बल सु चाल । तल फलत ढाल हिरनाल फाल ॥
दल हलत जानि सरिता सपूर । झलहलत छौल साइर हिलूर ॥
छं० ॥ ९६ ॥

थल जलत दृक्क मिलि कीच उठ्ठि । मिलि चलित संसि सामंत सुठ्ठि ॥
फल फलित मरन बंछत जिन्हैं न । कल कलत चंद कबि बल तिन्हैं न ॥
छं० ॥ ९७ ॥

---

(१) मो.-सौ, कृ.-सी ।　(२) मो.-बन्ध्यौ ।　* मो.-"सारथ्य कि सूर सम राज जोर" ।

पृथ्वीराज का भीमदेव के पास एक † चुल्लू भेजना।

दूहा ॥ अही चंद चंदह मरन । दिन दिन [१]सह्लै दुष्ष ॥
कहौ जाइ चालुक्क सम । मंगै बैर समुष्ष ॥ छं० ॥ ९८ ॥
† ले चल्लौ न्टप भीम कौं । चंगी दोय रसाल ॥
एक सुरंगी पघघरी । इक कंचुकी भुजाल ॥ छं० ॥ ९९ ॥
कवित्त ॥ मन मानै सोइ गहौ । करिव चित्तं इकतारं ॥
इह संसार सुपन्न । अपन ञुभञ्झै इक वारं ॥
चंद हथ्थ कहि पठय । भीम सम संभरि वारं ॥
तात बैर संग्रहन । वचन तत्तं उच्चारं ॥
गज भाट सुभर घट भंजि तुअ । सरित चलाउं रुधिर की ॥
धार सिंचि सोमेस कहुं । तपति बुझाउं उअर की ॥ छं० ॥ १०० ॥
रामाइन मघवान । बरषि घन अम्रत धारं ॥
बालमीक पीयूष । सींच लव रघुपति रारं ॥
अरजुन सयन समेत । आनि बब्बर पताल मनि ॥
बेद व्यास भारथ्थ । सकल क्षोहनि दीपक बनि ॥
चहु आन कहाइय चंदकर । पिता बैर कज इह बयन ॥
*चालुक भीम उन सम सुनहु । क्षुमह जिवावन अब कवन ॥
छं० ॥ १०१ ॥

चन्द का भीमदेव के पास जाकर युक्ति पूर्वक कहना कि पृथ्वीराज अपने पिता का बदला लेने को तय्यार है।

चल्यौ चंद गुज्जरह । गरै जारी जंजारह ॥
नीसरनी कुद्दाल । दीप अंकुस आधारह ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चह्लै।

* चुल्लू==स्मरण रहे कि यह चुल्लू Challenge का अपभ्रंश नहीं है। यह राजपुतानी भाषा का प्रचलित शब्द है जिसे बुन्देलखंड में चिन्नू चुन्नू भी कहते हैं। इसका अर्थ "किसी को अपने मुकाबले के लिये धमकी देना भड़काना या उभाड़ना है।

* छन्द ९९ से लगा कर छन्द १०१ पर्य्यन्त मो. प्रति में नहीं है।

कस सूल संग्रहै । गयौ चालुक दरवारह ॥
इह अचंभ जन देषि । मिल्यौ पेषन संसारह ॥
भेव्यौ सु भीम भोरा सुभर । कहिय बत्ति संभरि बयन ॥
हो भट्ट चट्ट बोलहु कयन । कहा इहै डंबर सयन ॥ छं० ॥ १०२ ॥
एन जाल संग्रहो । जाम जल भीतर पड़यौ ॥
इन नौसरनी ग्रहो । जाम आकासह चढ़यौ ॥
इन कुद्दालै घनौ । जाम पायाल पनट्ठौ ॥
इन दीपक संग्रहौ । जाम अंधारै नट्ठौ ॥
इन अंकुस असिवसि करों । इन त्रिसूल हनि हनि सिरों ॥
जगमगै जोति जग उप्परै । तोडर प्रथम नरिंदरै ॥ छं० ॥ १०३ ॥

भीमदेव का उत्तर देना कि मैं भी उसे दंड देने को प्रस्तुत हूं जो मेरे संमुख आवे ।

जाल ज्वाल करि भसम । करंस नौसरनी कट्टौं ।
घन भंजों कुद्दाल । दीप कर पवन झपट्टौं ॥
अंकुस अंकुर मोडि । तिनह त्रसूल संकोड़ों ॥
हनन कहै ता हनौं । जोति जग मच्छर मोड़ों ॥
हौं भीम भीम कंदल करों । मो डर डंक अचंभ नर ॥
मम करइ ग्रब्ब धरि लज्ज अब । बित्तक पुब्ब परच्चि पर ॥ छं० ॥ १०४ ॥
रे डंदर [1]विड्डाल । कोइ कारन भिर मच्चौ ॥
रे गिद्धिन सिर हंस । दैव जोगह सिर नच्चौ ॥
रे म्रग वघ सँग्राम । लरै वर अप्पन आयौ ॥
रे अप्पह सो समर । करै मंडुक जस पायौ ॥
आचंभ ब्रह्म गति वह नहीं । बार बार तुहि सिष्यियै ॥
प्रज्जरै झार तरवर गिरह । का दीपक लै दिष्यियै ॥ छं० ॥ १०५ ॥
बैन बाद सो करै । होइ भट्टह कौ जायौ ॥
गारि रारि सो भिरै । जेन रस षष्य न पायौ ॥
हथ्थ बथ्थ सो भिरै । घरह धन बंधव [2]बट्टै ॥
इह सोमेसर बैर । लेहु अप्पन सिर सट्टै ॥

(१) ए. कृ. को.-बिड्डाउ । (२) ए.-बढ़ै ।

तुम कह्यौ जाइ संभरि बयन। इन डिंभन डिंभरु डरै॥
संचर्‌यौ दरक हक्कै चरत। [1]सुज्ज फटक्कै निक्करै॥ छं०॥ १०६॥

चन्द का भीमदेव के दरबार से कुपित होकर चला आना।

दूहा॥ चंद मंद मन आतुरह। उठ्यौ रत्त करि नेंन॥
फिरि पहुंच्यौ न्रप पिथ्थ पै। [2]कहै चरक्का बेंन॥ छं०॥ १०७॥

भीमदेव का अपने भाट जगदेव को चंद के पास भेज कर अपनी तय्यारी की सूचना देना।

कवित्त॥ सुनौ भट्ट जगदेव। कहै भोरा भीमंदे॥
तुमहु चंद पै जाहु। षबरि पायान दियंदे॥
जो कछु तुम बुल्लए। ज्वाब मंगन हौ आयौ॥
ज्यौं सुत्तौ सुष उरग। मौड़ि बर पुंछ जगायौ॥
आयौ नरिंद गुज्जर सबर। कीरिय सेन चतुरंग भर॥
मो दिठ्ठ दिठ्ठ पुच्छिय सयन। बयन [2]वाद मनो न उर॥
छं०॥ १०८॥

जगदेव बचन।

कहु मिसरे छेड़यौ। राउ गुज्जरी नरेसर॥
दीबो जाल कुदाल। कहमि वह सह आडंबर॥
कह मिसरै कैमास। जास पुच्छंत विचष्षन॥
चामँड रा कहां गयौ। बहुत राया बर दष्षन॥
कह मिसरे कन्ह बिप्पजौ। जग्गदेव संचौ चविय॥
वंभन हय या दिढ्ढ धर। कह मिसरें संभरि धनिय॥ छं०॥ १०९॥

चन्द बचन।

वार बार षेल्लयौ। सरस बत्तडिया गुज्जर॥
अव विगत्ति [3]लभ्भिहै। [4]मिरच चव्वै ज्यौं गज्जर॥

---

(१) मो.-"क्यों छज्ज फट्टकै निक्करै"। (२) ए. कृ. को.-झुठ।
(३) ए कृ. को.-लाग्गे है। (४) मो.-मिरच चढ्ढे ज्यौं गज्जर।

तूंअंनि राव मजाम। जिके रन अंगन जित्ता ॥
इन संभरिवै राव। कोड़ि सै सहस्र विधत्ता ॥
मेदयौ नहीं गुर अप्परौ। कविय वयन संम्हौ सरै ॥
कर नहीं मंच बौछिय तनौं। घत्ते हथ्थ सुप्पा हरै ॥ छं० ॥ ११०॥

जगदेव का चन्द का रूखा उत्तर सुन कर भीमदेव के पास फिर जाना।

दूहा ॥ सुनि सु बेंन जगदेव फिरि। कहि भोरा भीमंग ॥
आयौ नृप चहुआन सजि। हय गय भर चतुरंग ॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का निढ्ढुर को युद्ध का भार सौंपना।

कवित्त ॥ ढिग बुलाइ प्रथिराज। हथ्थ निड्ढुर कर धारिय ॥
सकल सूर सामंत। जुड्ड मग्गंह अधिकारिय ॥
आदि राज पहु आदि। आदि सम जुड्ड समंडौ ॥
दैव काल संग्रहौ। बलह भारथ जिम पंडौ ॥
मन्नै अनन्य संसार सह। छिति छचिन महि छजत रज ॥
एकंग अंग जंगह अटल। करन जुरौ सामंत सज ॥ छं० ॥ ११२ ॥

निढ्ढुर का पृथ्वीराज को भरोसा देकर स्वामिधर्म की प्रशंसा करना।

कहि निभ्भर सामंत। जूह जंगन दल मंडन ॥
समर समै रति स्वामि। तनह तिनुका सम षंडन ॥
इक उभत जुध उड्ड। इक गज दंत उपारहि ॥
इक कमंध उठि लरहि। इक रुधि बीर बकारहि ॥
संभरि नरिंद तुम संभरौ। धरिय उदर इम एह बल ॥
बड़ बंस अंस दानव [1]प्रबल। करहु मोह हम भाग बल ॥ छं० ॥११३॥

निढ्ढुर का कन्ह राय कीं प्रशंसा करना।

दूहा ॥ बालप्पन जोवन बिरध [2]रन रत्तौ जोधार ॥
कन्ह दलन अरि मंडइय। नन तिरुका करि डार ॥ छं० ॥ ११४ ॥

(१) मो.-अचल। (२) ए. कृ. को.-नर।

जिन अंषिन भर पट रहै। सोइ छुट्टै है ठाम ॥
कै सज्या वामा रगत। कै छुट्टत संग्राम ॥ छं० ॥ ११५ ॥
जे बंके विरदन वहै। नरन नाह जग जप्प ॥
कै भारथ भीषम सुभट। कै रामायन कप्प ॥ छं० ॥ ११६ ॥

पृथ्वीराज का निढ्ढुर को मोती की माला पहनाना।

अमुल माल मुत्तिय सजल। मोल लष्य गुन मान ॥
अप उरते उत्तारि न्रप। दीनी निढ्ढुर दान ॥ छं० ॥ ११७ ॥

निढ्ढुर का सेना की तय्यारी करके स्वयं युद्ध के लिये तय्यार होना।

कवित्त ॥ हालाहल उर झाल। माल मुत्तिय दुति राजै ॥
रवि कंठह जनु गंग ॥ ईस जनु सीस विराजै ॥
सुभर निडर रट्ठौर। बज्जि नीसान गराजै ॥
जैसै बज्जत डंक। बीर बढ्ढत बल ताजै ॥
मंडई मरन मन अरि कलन। चलन चित्त मन अटल हुअ ॥
सब सेन मध्य इम राजई। यह मग्गह ज्यौं जानि धुअ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह को पवाई पहिनाना।

दूहा ॥ फुनि कन्हा प्रथिराज न्रप। [1]पाव पवंग परट्ठि ॥
लेइ नहीं मन संझ मल। निठ्ठु चढ़ाईय हट्ठि ॥ छं० ॥ ११९ ॥

कन्ह का युद्ध में अपने रहते हुए सोमेश्वर के मारे जाने पर पछतावा करना।

कन्ह कहै न्रप जंगल। मोहि सजीवन भिट्ठ ॥
सोम अरिन तन सड्डयौ। पंजर हंस न नट्ठ ॥ छं० ॥ १२० ॥

निढ्ढुर का कन्ह को संतोष दिला कर उत्साहित करना।

कवित्त ॥ एक समैं सुग्रीव। चिया न रष्षिय अप्प बल ॥
एक समै द्रुज्जोध। करन रष्ये न जित्ति पल ॥

(१) ए. कृ. को.-पार्ट। (२) मो.-मीमंग।

एक समै श्री राम। सीय बनवास अग्नि ग्रहि॥
एक समै पंडवन। चीर रष्यौ न द्रौपदहं॥
तुम कन्ह कंक अकलंक कहि। इष्ट रूप हम सब जपहिं॥
तुम तेज अंषि देषत नयन। मोर अप्प सम भर जपहिं॥छं०॥१२१॥

दूहा॥ निढ्ढुर कन्ह प्रमोधि इम। सोलंकी सौसंग॥
सुनि आए धाए दुसह। दल दारुन भीमंग॥ छं०॥ १२२॥

सेना का सज कर आगे बढ़ना।

गाथा॥ जाइ संपते सूरं। पट्टन सेनाय मंड भारथ्यं॥
तातं बैर प्रमानं। बड्ढे बीराइ बीर षल याइं॥ छं०॥ १२३॥

चहुआन और चालुक्य की सेनाओं का परस्पर मुठभेड़ होना।

दूहा॥ दिषादिषी दुअ सेन भय। नारि गोर गहरानि॥
कुहकबान आघात उठि। उड़िय अग्गि असमान॥ छं०॥ १२४॥
अग्ग पच्छ बाजू बियन। दल मंडै दुअ राइ॥
तत्त तुरी जे तत भरे। असि कड्ढै घन घाइ॥ छं०॥ १२५॥

भीमदेव के घोड़े की चंचलता का वर्णन।

कुंडलिया॥ फिरत तुरी चालुक्क रन। बर रष्षै चिहु कौंन॥
नस चंपै न सु ढिल्लवै। ज्यों बंदर को छौंन॥
ज्यों बंदर को छौंन। मुष्ष भंजै नन मंचै॥
तेज तुरी नष्पते। जानि आसन मन संचै॥
राग समंचै बाग। सीर लष्षै पति हेरै॥
लिषिय चित्त असवार। मत्त मत्ते हय फेरै॥ छं०॥ १२६॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे से भिड़ना और उनका विषम युद्ध।

दूहा॥ कढ़त बैर बंकम विषम। विषम ज्वाल छिगि सार॥

सार सतीरन झेल नह। भर [1]निचिंत पहार॥ छं०॥ छं० ॥१२७॥

रसावला॥ [2]मिले बीर भट्टं, सुरंग सुथट्टं। हवी हथ्थ छुट्टं, नरं सूर लुट्टं॥ छं०॥ १२८॥

मनों लागि नट्टं, भरैं हड्ड फट्टं। मनों कढ [3]कंठ, बहै तेग तट्टं॥ छं०॥ १२९॥

मनों चट्ट पट्टं, सिरं गुर्ज फट्टं। फुटै दद्धि मट्टं, षगं गे उहट्टं॥ छं०॥ १३०॥

परै सीस कट्टं, धपै लोह थट्टं। मुषं मार रट्टं, छुटी कन्ह पट्टं॥ छं०॥ १३१॥

अगी ज्यों लपट्टं, परै वट्ट वट्टं। धरा ज्यों रपट्टं, गजं दंत भट्टं॥ छं०॥ १३२॥

मनों कंद जट्टं, मिले बथ्थ चट्टं। मनों मल्ल हट्टं, गजं यों उहट्टं॥ छं०॥ १३३॥

मनों भीम हट्टं, ढहै ढाल बट्टं। मनों चट्ट अट्टं, लगी तीर तट्टं॥ छं०॥ १३४॥

उरं फारि फट्टं, नचै ईस नट्टं। उमा अग्ग थट्टं, रुधं काल चट्टं॥ छं०॥ १३५॥

[4]धरं माल अट्टं, पलं गिद्धि गट्टं। लगै गैन घट्टं, बहै सुर्ग वट्टं॥ छं०॥ १३६॥

मगं मग्ग [5]थट्टं, मुकत्ती स लुट्टं। [6]रिनं षत्त फटं, ... ॥छं॥१३७॥

कन्हराय की पट्टी छूटना और वीर मकवाना से कन्ह का युद्ध होना।

दूहा॥ पट्टे छुट्टत कन्ह चष। षल धारा धर बज्जि॥
मानों मेघन मंडली। वीर बीजली रज्जि॥ छं०॥ १३८॥

कवित्त॥ इत सु कन्ह चहुआन। उतह सारँग मकवाना॥
बल बड्डे बल बंड। जानि कंठीर लोहाना॥

(१) मो.-तिचित्त। (२) मो.-जुरे। (३) ए. कृ. को. कट्टं।
(४) को.-वरं, मो.-रवं। (५) मो.-हट्टं। (६) मो.-रिंपं।

कर कढ्ढि करिवारि। भार ठिल्लिय भर भारी॥
स्वामिधर्म सुद्धरै। बार हत्ती सु करारी॥
लिष्षे सु अंक विधि कंक जिहि। आनि सपत्तिय सो धरिय॥
अदभूत रुद्र रस विस्तऱ्यो। सु कविचंद छंदह धरिय॥छं०॥१३९॥

मकवान का मारा जाना।

दूहा॥ षत फट्टे सारंग ने। रस जम कन्हा वंत॥
[1]झुक्कि पऱ्यौ मकवान रिन। गल गज्जे सामंत॥ छं०॥ १४०॥

सामंतों का परक्रम और शूरवीर योद्धाओं की निरपेक्ष वीरता की प्रशंसा।

रंडरि धर [2]सारंग की। परत पहुमि मकवान॥
सूर सु गज्जै जंगली। भै भग्गौ अरियान॥ छं०॥ १४१॥
सिद्धि न लब्भै सिद्धि जै। ते लद्धी सामंत॥
छाया माया मोह बिन। विमन सुमन धावंत॥ छं०॥ १४२॥
कवित्त॥ द्रुमंति तजत बर अंत। रत्त चच्चर सौ झारन॥
अप्प अप्प संग्रहै। पार दुज्जनन उतारन॥
सार मुगति संग्रहै। जियंन सुपनौ करि जानै॥
राति दिष्षि जंजाल। प्रात पीछे न पछानैं॥
यौं जानि सूर सद्धत रनह। बन सु अग्गि जनु वाय बसि॥
स्वामित्त तेज तिम तन तपन। दोष न लग्गे जीर जस॥छं०॥१४३॥
गाथा॥ उट्ठय आवत झारं। धारं पाहार पुंति सुभटायं॥
घहर घोष घन भट्टं। यौं बरषंत बीर बंकायं॥ छं०॥ १४४॥
दूहा॥ बहुरि न हंसा पंजरह। जे पंजर तुटि धार॥
हंस उड़ा जब [3]नट्ठयी। पंजर सार असार॥ छं०॥ १४५॥
कवित्त॥ पहर एक भर भरह। टोप असिवर वर बज्जिय॥
बषर पषर जिन साल। सूर सामंत न भज्जिय॥

(१) मो.-झुझ्झि। (२) ए. कृ. को.-चालूक।
(३) ए. कृ. को.-लट्ठयी।

हय हय हय उच्चार। घाय घायल घट गज्जिय॥
चह चह चबंक बज्जिय। तुट्टि पाइक बिन तज्जिय॥
रोस रसि वसिय सामंत रसिय। अयुत युद्ध उड्डह गतिय॥
सामंत सूर दिसि सुर लरत। कहत धन्य राजन रतिय॥छं०॥१४६॥

रणक्षेत्र की सरित सरिताओं से उपमा वर्णन।

गाथा॥ साभर मती सरित्तं। गुज्जर षंडेव धार धारायं॥
दुअ तद रुधिर उपट्ट। वहै प्रवाह हथ्थियं बाजं॥ छं०॥ १४७॥
दूहा॥ हथ्थि वाजि नर भर बहत। सिंघनि धुनि गरजंत॥
एक घरी अदभूत रस। रुद्र भयो विसमंत॥ छं०॥ १४८॥
मोतीदाम॥ मिले चहुआन सु सत्तय बीर। तजै भव मोह भजै षग श्रीर॥
झरै सिर झार दुधार प्रवाह। परें रन में ज्युँ मदंध गवार॥
छं०॥ १४९॥
उठै धर श्रोनिय छिंछ उतंग। सु पावक ज्वाल मनों गिरि शृंग॥
उड़ै घन सार झनंकत षग्ग। मनों जुग जुग्गिनि लग्गिय मग्ग॥
छं०॥ १५०॥
भनंत कि भौंर कि तीरन तार। विठं तजि पंकज फुट्टत फार॥
परे बहु पंतिय सोलंक सेन। लियौ तिन तात सुबैर बलेन॥
छं०॥ १५१॥
इसे रन रंग सुभैत सुढार। मनों मय मत्त परे बिकरार॥
छुटंतय तीर सुभंत सुमार। उड़ै जनु झिंगन भद्दव पार॥छं०॥१५२
[1]दमंकत तेज सु बंकिय बज्जि। रहै रन राज फवज्ज सु सज्ज॥
॥ छं०॥ १५३॥

प्रसंगराय खीची का पराक्रम वर्णन।

कवित्त॥ षिझि षीची परसंग। समुद अरि ग्रहन कि गस्सिय॥
बड़वानल वलिबंड। षग्ग षोहनि दल षस्सिय॥
बढ़त सेन तेइ जरहि। पढ़त जनु भस्म कुढ़ी हुय॥

(१) ए. कृ. को.-मदंकंत।

जहं तहं जंगल सूर। कहि मुष सकै न आन कुय।
कर पच मंच जुग्गिनि जगहि। रज्जि पलहारिय, युड विन॥
चमरैत बैत जनु किंसु बन। इम तन रज्जिय सोभ तिन॥छं०॥१५४॥
षिभ्भि, नरिंद हय नंषि। बज्जि षुरतार कंपि भुअ॥
अष्ट सु चल [1]दस विचल। कंपि संपात पात हुअ॥
उठिय [2]मुष्य मुछ बंक। सीस लग्गौ असमानं॥
पंषि जान पावै न। करहि कुंडल कंमानं॥
घरि एक घावि बिभ्रम भयौ। हाइ हाइ मच्चौ कलह॥
तिन सहं सिंभ सिंभासनह। उघरि बीर दिष्यौ परुह॥छं०॥१५५॥
गाथा॥ यों कुट्टे सुर सारं। घावं घड़य घन सु लोहारं॥
भद्रं सूर प्रकारं। आभद्रं द्रुजनो ग्रेहं॥ छं०॥ १५६॥

भीमदेव की फौज का विचलना।

साटक॥ आभद्रं बर ग्रेह दुज्जन वरं, भद्रं न्रपं राजयं।
जे भग्गा सामंत बीर बसुधा, तत्तेव जीवंतयं॥
भग्गा सनेय बीर चालुक रनं, मुक्ती वरं मुक्कयं॥
अंती अंत सु अंत अंतरु [3]रतं, जुत्ती तुमंतं करी॥ छं०॥ १५७॥

शूरवीर पुरुषों के पराक्रम की प्रशंसा।

दूहा॥ काल व्याल सम कर ग्रहन। भिरत परत अरि तथ्थ॥
दिव देवासुर उच्चरै। धन्न सु छचिय हथ्थ॥ छं०॥ १५८॥
सूर हथ्थ हथ्थिय ग्रहिग। चरन भान आनंद॥
सूरज मंडल [4]भेदिते। जोति जगत्ति न इंद॥ छं०॥ १५९॥
घट [5]घट्टै लुट्टै सुगति। छिति छुट्टे रति चाव॥
यों मत मत्ते रत्त रन। ज्यों बलि वावन पाव॥ छं०॥ १६०॥
गाथा॥ वामन दिट्ठ सु पावं। ईसं जच्चि सुवीयं सहयं॥
एकक पाइक सूरं। सो जित्ते तीनयं लोकं॥ छं०॥ १६१॥

(१) ए. कृ. को.-दल। (२) ए. कृ. को.-मुछछु भुव। (३) मो.-रन।
(४) मो.-मेदिकै। (५) मो.-घुटै।

स्वामिभ्रम्म सुध मत्तं । सुधयं मत्ताइ तत्त गुनयं मी ॥
धीरं धीर अधीरं । धीरं छुट्टेव हथ्थयं दिघ्घं ॥ छं० ॥ १६२ ॥

परस्पर घमसान युद्ध का दृश्य वर्णन।

चोटक ॥ सुमिले चहुआन चलुक्क अनी । जु [१]बजे जनु देवय दिव्य धुनी ॥
रनकावत षग्गत हथ्थ करैं । अनु बीर जगावत बीर उरैं ॥
छं० ॥ १६३ ॥

गहि चच्चरसी चवरंग रजं । मनों भद्दव बद्दल मद्द गजं ॥
सपरै गज कंक करंन भरं । सु उड़ै जनु पंतिय पंष भरं ॥
छं० ॥ १६४ ॥

भननंकय बीरति बीर सयं । स नचै जनु रुद्रय बीर हयं ॥
ततथे ततथुंगय सार रजी । उड़ि काम किरच्चिन मंत गजी ॥
छं० ॥ १६५ ॥

पल में पल वित्तय पंच उड़ै । बहुऱ्यौ नन कालय बीर बुड़ै ॥
मसुरत्ति सरत्ति सरत्त रसौ । सु उड़ै जनु सार सपत्ति बसौ ॥
छं० ॥ १६६ ॥

मय मंत सु मंति न दंति यता । भजि बीर डरावन साज हिता ॥
रननंकत तुंग तुरंग रनं । भननंकहि पग्ग झुमग्ग घनं ॥
छं० ॥ १६७ ॥

दुअ बीर दुहाइय हथ्थ पढ़ैं । सु बढ़ै तनु विजुल हथ्थ कढ़ै ॥
॥ छं० ॥ १६८ ॥

दूहा ॥ बढ़ि विज्जल सथ हत्ति कर । गुर घर घंमति वाउ ॥
देव दिषै देवत रिझै । धनि सामंत सु घाउ ॥ छं० ॥ १६९ ॥

कवि का कहना कि कायर पुरुषों की अपगति होती है।

गाथा ॥ तब कैमास सु जुद्धं । बुधं किंन्न तीनयो वारं ॥
आद्दत्त हत्तिय चायं । न चायं नेह नारियं बीरं ॥ छं० ॥ १७० ॥
बंचै सुगत्ति [२]न बंचै । बंचै स्वामित्त जुद्धनो बरयं ॥
सा घट घट भौ थिरयं । जंगम जुत्ताय थावरं बीरं ॥ छं० ॥ १७१ ॥

(१) मो.-बजे। (२) मो.-सु।

चौपाइ॥ थिर थावर जंगम नह बीरं। बज्रंगी धर बज्र सरीरं॥
बज्र घाइ आघात न छुट्टै। फिरि फिरि मुक्क रास करि लुट्टै॥
छं०॥ १७२॥

दूहा॥ ढाहि सेन चालूक बर। घटिय सेन चहुआन॥
दुहुं मंझझै कोविद्द ज्यौं। धर छंडै नह थान॥ छं०॥ १७३॥

चौपाइ॥ धूम्र धूम्र थानय नन छंडैं। भान संझ संझ्या गुन षंडै॥
कैबर रत्त अद्रत्तत चाई। कैबर स्नूर परे घन घाई॥ छं०॥ १७४॥

दूहा॥ बजहि घाव घरियार जिम। राइन दोऊ सेंन॥
चालुक्क चोहान रिन। भयौ भयानक गैंन॥ छं०॥ १७५॥

पृथ्वीराज और भीमदेव का साम्हना होना और कन्ह का भीमदेव को मांर गिराना।

मोतीदाम॥ मिले रिन चालुक संभरिनाथ। बजी कल क्रूह सु बज्जन हाथ॥
ढहै गज गुंजत रोस चिकारं। परें हय तुट्टि अदभ्भुत रारि॥
छं०॥ १७६॥

जहां तहां संग फुटै धर पार। बहै सर स्रोन कि जावक धार॥
भई सिर छाह कमानन तीर। फुटै धर पंजर धुक्कि गहीर॥
छं०॥ १७७॥

भयानक भेष भयं असकंक। थलप्पल रुद्धि मची जनु पंक॥
अदभ्भुत कंक विरच्चिय बीर। कढ़ी अस कोह भरक्किय भीर॥
छं०॥ १७८॥

उतें न्रप भीम इतें [1]चहुआन। गही कर नागनि सी असि [2]पान॥
[3]घनहनि भीम रह्यौ घट जंत। सु आनि कें आज [4]पहूंचिय अंत॥
छं०॥ १७९॥

करौं धर रुंडरि गुज्जर देस। हकारिय भीम भयानक भेस॥
हहंकिय भीम न पावहि जानि। [5]बिठाउन सोमह सुर्ग ढिगान॥
छं०॥ १८०॥

(१) ए. कृ. को.-प्राधिराज। (२) ए. कृ. को.-साज।
(३) ए. कृ.को- घनहन। (४) मो--सिर्पत। (५) मो.-बैठे उत।

पचारिय कन्ह सु पिथ्थ पछाय। हनै किन सूरन निक्करि जाइ ॥
कियं सुनि घाव सु संभरि वार। वही असि कंध जनेउ उतारि ॥
छं०॥ १८१ ॥

धुकंत सु घाव कियौ भर भीम। सु रेंषसि सेष वही असि हीम ॥
जयं जय जंपय देव दिवान। रही घर अच्छरि अच्छ विमान ॥
छं० ॥ १८२ ॥

धरें सिर राजन अंमर फूल। परी सुनि चालुक सेनह हूलि ॥
जितं तित उट्ठहिं छिंछ अनंत। निपज्जिय षेत प्रवालिय [1]भंत ॥
छं० ॥ १८३ ॥

जितं तित हक्कत सीस धरंन। भयानक भेष बकंत बरन्न ॥
कमंध करंत जितंतित घाइं। हनंत फरंत कि भूत विलाइ ॥
छं० ॥ १८४ ॥

जितं तित घाइल घूमत सार। [2]रनंकिन छक्कि कि छक्कि गमार ॥
जितं तित तर्फंत लुथ्थि चिहार। [3]जलं मझि डारि कै मीन कहार॥
छं० ॥ १८५ ॥

जितं तित हथ्थिय लुट्टत भूमि। रची जनु भीम भयानक भूमि ॥
जितं तित घाइल पारत चीस। लरै जनु प्रेत करी कल रीस ॥
छं० ॥ १८६ ॥

जितं तित श्रोन भभक्कत घाइ। फटै जनु नाव दर्याव मझाइ ॥
भयं इम भीम भयानक अंत। सु बैठि विमान सुरप्पुर जंत ॥
छं० ॥ १८७ ॥

भई रिन जीति जयं प्रथिराज। बजे रनयंच सबद्दय बाज ॥
जपै सुर चारन गंध्रब भाट। मिले सब आनि फवज्जनि थाट ॥
छं० ॥ १८८ ॥

जयं जय सद्द सु जंपिय भेव। झरै सिर पुप्फ सु अंबर केव ॥
॥ छं० ॥ १८९ ॥

(१) मो.-नंत। (२) ए. कृ. को.-रनंमाने। (३) मो.-ललं।

कन्ह की तलवार की प्रशंसा।

कवित्त ॥ सिलह मभ्भ्भ षग धार। बीय उंग्यौ ससि सोभै ॥
कै नव बधु[१] नष षित्त। काम आकार अलोभै ॥
मरम बीर कत्तरी। दिसा वर तिलक पुब्ब बर ॥
कै कुंची शृंगार। बहुरि सोभै ओपम धर ॥
सोभंत चंद की कला नभ। कल कलंक सोभै न तन ॥
ढुंब्यौ जु षेत सामंत नैं। बुभ्भयौ राज तामंस मन ॥ छं० ॥ १९० ॥

चहुआन का पितृ वैर बदलने पर कवि का बधाई देना।

दूहा ॥ लियौ बैर चहुआन नृप। बजि निरघोष सु घाव ॥
चावद्दिसि सेना फिरी। बंर बीरां रस चाव ॥ छं० ॥ १९१ ॥

पृथ्वीराज के सामंतो की प्रशंसा।

बीरां रस बर बढ़िय भर। घट्टिय घट तन पंत ॥
जंम तजत जोगिनि सुजस। धनि सामंत सु मंति ॥ छं० ॥ १९२ ॥
गाथा ॥ लज्जी कज्ज मरिज्जैं। उदरं हत्त घाव घन घड़यं ॥
कठिन क्रष्य कलहंतं। मरनं पच्छ निपज्जै साइं ॥ छं० ॥ १९३ ॥
गरजि तबै वेतालं। रनं रंगेव रच्चियं काली ॥
पलहारी पल पूरं। हूरं हूर बरन बरनाई ॥ छं० ॥ १९४ ॥

सायंकाल के समय युद्ध का बंद होना।

संभ्भ सपत्तय हूरं। भेषं भयान भंतियं क्रूरं ॥
करुन बीर रस पूरं। नूरं दुअ सेन दिष्याइं ॥ छं० ॥ १९५ ॥
दूहा ॥ राति रहे तिन रनह मैं। सब सामंत [२]षट हूर ॥
धाइ रहै घट्ट घाइ सौं। भयौ प्रात बर नूर ॥ छं० ॥ १९६ ॥

प्रभात समय की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ निस सुमाय सत पच्छ। मुक्कि अलि [२]भ्रम तुक सारस ॥
[३]गय तारक फटि तिमर। चंद भग्यौ गुन पारस ॥

(१) ए. कृ. को.-सत।   (२) ए. कृ. को.-भ्रमन।   (३) ए. कृ. को.-गंत।

देव क्रम्म उघघरहि। बीर बर क्रम्म सुनिज्जइ ॥
सोर चक्र तिय तज्जिय। नयन घुघ्घू रस भिज्जइ ॥
पहु फट्टि फट्टि गय तिमर नंभ। बजिग देव धुनि संष धुर ॥
भय भान पनान न उघऱ्यौ। करहि [1]रोर द्र,म पष्ष तर ॥ छं०॥१९७॥
सरद इंद प्रतिव्यंब। तिमर तोरन किरनिय तम ॥
उग्गि किरन वर भान। देव बंदहि सु सेव क्रम ॥
कमल पानि सारथ्थ। अरुन संभारति रष्षै ॥
जमुन तात जम तात। करन कंचन कर बरषै ॥
ग्रीषम जवास बंध्यौ कमुद। अरुन बरुन तारक चलहि ॥
सामंत स्हर दरसन दिषिय। पाप धरम तन बसि लसहि ॥ छं०॥१९८॥
मुरिल्ल ॥ के विगया महि मंडल स्हरं। षग षंडे बर बीर सपूरं ॥
हनिग राव भीमंग सु हथ्थं। बढ्ढी कित्ति जित्ति मनमथ्थं ॥
छं० ॥ १९९ ॥

रणक्षेत्र की सफाई होकर लाशें ढूंढ़ी गईं।

कवित्त ॥ भिरिग स्हर सामंत। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
सघन घाव पम्मार। बीर बीरां रस जुट्टिय ॥
[2]बढ़वि सेन दोउ बीर। षेत ढुंढ्यौ न बीर दुहुं ॥
उतर भुम्मि भारथ्थ। सार नंष्यौति सार मुह ॥
बय ध्यान मान सम स्याम दिष। किय कीरत्ति अचल कलह ॥
सामंत स्हर सम स्हरतन। कवि सु चंद जंपै बलह ॥ छं० ॥ २०० ॥

युद्ध में मरे हुए सूरवीर और हाथी घोड़ो की संख्या।

डेढ हजार तुरंग। परे रन बीर बीर भट ॥
अद्ध सहस हथ्थी प्रमान। आरुहिय मेघ घट ॥
पंच सहस परि लुथ्थि। दंत सों अंत अलुझ्झिय ॥
दइय काल संग्रहै। लिषे बिन कोइ न झुझ्झिय ॥
द्वै घरी श्रोन बरषंत धर। पति पहार घर डोलयौ ॥
सामंत स्हर स्वामित्त पति। जीभ चंद जस बोलयौ ॥ छं० ॥ २०१ ॥

(१) ए. कृ. को.-रोम। (२) ए. कृ. को.-चढ़वि।

संसार की असारता का वर्णन ।

है संसार प्रमान । सुपन सोभै सु बंस सब ॥
दिष्टमान बिनसिहै । मोह बंध्यौ सु काल अब ॥
काल कृत्य षट्टीक । आज बंध्यौ नर ग्रेही ॥
दया देह संभवै । दया बंधै तिन देही ॥
सामंत सूर साध्रम्म धनि । सज्जिय भज्जिय जानियै ॥
संसार असत आसत्त गति । इहै तत्त करि मानियै ॥ छं० ॥ २०२ ॥

दूहा ॥ बँध्यौ भीम जब राज प्रथि । बैर लियौ षगबाहि ॥
दोहित संजम सूर कौ । कीनौ कचरा राइ ॥ छं० ॥ २०३ ॥
दस बंदर कचरा दिये । दियौ चमर छत्र साज ॥
चौरासी बंदर महै । और रषैं प्रथिराज ॥ छं० ॥ २०४ ॥
भोम दई दीनों तिलक । लीन्हो कचरा संग ॥
* प्रथीराज दिल्ली चले । काढ़ि बैर अनभंग ॥ छं० ॥ २०५ ॥

गुजरात पर चढ़ाई करके एक मास में पृथ्वीराज का दिल्ली को वापिस आना ।

कवित्त ॥ तात बैर संग्रह्यौ । जीति जैपत्त सु लिन्नौ ॥
ढीली पत्तौ राज । किति संसार स भिन्नौ ॥
न्रिप संधव [1]सो उदर । सोइ सामंतनि रष्यिय ॥
एक [2]मग्ग उग्रहै । एक मग्गह रस भष्यिय ॥
पंचमी दिबस रवि वार बर । इंद्र जोग तहां बरति तिथ ॥
दिन चढ़ै राज प्रथिराज जय । जै हय गय नर भर समथ ॥ छं० ॥ २०६ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोलाराय भीमंग बधो नाम चौंवालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४४ ॥

* छन्द २०३ से २०५ तक मो.-प्रति में नहीं है ।
(१) मो.-जो ।　　(२) ए. कृ. को.-मेया ।

अथसंयोगिता पूर्व जन्मप्रस्ताव लिष्यते ॥

(पैंतालिसवां समय।)

पृथ्वी का इन्द्र प्रति वचन ।

दूहा ॥ कहै चंडि सुरपति सुनहि । धरनि [1]अघावहु लोहि ॥
रामाइनं भारथ्थ [2]छुध । रही निहारै तोहि ॥ छं० ॥ १ ॥

इन्द्र का उत्तर देना ।

कवित्त ॥ [3]सा वसुमति बर चवै । सुनहु बर चंड दंड सुर ॥
रामायन रन वह । राम रावेन भान [4]भुर ॥
[5]धर मुष्षै क्यों [6]रहै । कहन हर हार तार गर ॥
हर समर सुर धष्षि । अष्षि अन पष्षि तष्षि कर ॥
धक धार सार करिबार कर । मार मार मुष उच्चरिय ॥
असुचर अधंभ बव मंस चर । रुधिर केम अचिपत परिय ॥छं०॥२॥

दूहा ॥ कर जोरैं सुर राज सों । कहत असंभम बात ॥
कोपि गोप उरगनि गरति । कीन अोन आघात ॥ छं० ॥ ३ ॥

तदनुसार राम रावण युद्ध ।

सिर स्यंदन लोचन अलग । धौरन अनि जग घोर ॥
बरषि बीर रस बहुल सर । सोसि सार रत धोर ॥ छं० ॥ ४ ॥

राम रावण युद्ध का आतंक ।

हनूफाल ॥ हक हक्कि देव अदेव । धर कंपि धर धरकेव ॥
पिठ कमठ कठ्ठ करुर । अत कजत काइर नूर ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) मो.-अघावहि । (२) मो.-वृध । (३) मो.-सच्च सुमति ।
(४) मो.-सुर । (५) मो.- तुम । (६) मो.-रहौं ।

बलि मध्य बीर करूर। जग षग्ग लग्गि [1]गरूर॥
पथ पथ्य अंमर सूर। दह दिग्ग सुष्षम [2]नूर॥ छं० ॥ ६॥
चवअंत अंत नमंत। छुय लोक चामर जंत॥
बिम्मान [3]मानिय रूढ़। [4]अंबरन रचिय गूढ़॥ छं० ॥ ७॥
छत [5]बिछति [6]रघु लछिराय। रथ निगछ सुर हय चाय॥
भाल भयंक जाम अतंक। सेन सु भूमि सेन पतंक॥ छं० ॥ ८॥
बातन तात तेज अपान। उपट उपट्टि दोन सु घान॥
लगि रघुपग्ग अंग उतंग। गो परिवान दग्गि पतंग॥ छं० ॥ ९॥
सुर सुर राज सोच दिवांन। जय जय अच्छि कच्छि बिमान॥
॥ छं० ॥ १०॥

मुरिल्ल॥ अंमर जय जय सद्दिय अंमर। रेनि ऐनि अक बढ्ढिय संमर॥
संमर अंमर [7]कौतिक जच्छिन। छाय छलं छिति भद्र सु पच्छनि॥
छं० ॥ ११॥

गीता मालची॥ सुमिरंत सुमिरिय मंच मूरध उरध हंकह धक्कयं॥
*किल किलकि दनुज कि यच्छ भूत कि जलकि किलय कल्लयं॥
बक [8]बकय डोंरू डमर अंमर चमर बपुअस पंगुरं॥
झलमलत भाल बिसाल बिधु बर अंब रालक अंमरं॥ छं० ॥ १२॥
जट बिकट तट जल उछत हलि हलि प्रजलि नलिनिय चच्छयं॥
[9]चव अग्ग सट्ठिय चवति चवदिसि पत्त जोगिनि कच्छयं॥
भुअ इंद जीति सभीति ह्वै अरि अभै लच्छिन जाइयं॥
उड़ि अस्त्र अंग सु सस्त्र निसजर गिरित गिरधर छाइयं॥ छं० ॥ १३॥
बिनि रंग अच्छरि ब्योज्ञ ब्योमनि ताल बाल बितालयं॥
सुर श्रवत श्रम जल चवत संमर पानि अंजुल मालयं॥
छं० ॥ १४॥

(१) ए. कृ. को.-करूर। (२) ए. कृ. को.-तूर। (३) मो.-मानिन।
(४) ए. कृ. को.-अंमरन। (५) ए. कृ. को.-बिछकि।
(६) ए.-रषु। (७) ए. कृ. को.-कौतक।
* मो.-किल किलकि दनुज कि दनुज कि जल के किलयति कल्लयं।
(८) ए. कृ. को.-बहुय। (९) ए..अब।

कवित्त ॥ पजलिंदग चवरंग। छत्त रत छिंछ छाइ भर ॥
अग्ग रित्ति रिति राइ। चाइ नक कोप' रंग बर ॥
निसचर बन चर चमर। अरिन लंगे अरि [1]घाइन ॥
जुत्त तत्त करि सीस। पाइ कर कंजन छाइन ॥
अरि इंद्रजीत भय भीत ह्वै। भूत भंति तंडव चरनि ॥
किल किलकि अमर अंजुल' पहुय। लच्छि राइ मूरध धरनि ॥
छं० ॥ १५ ॥

ऊधो ॥ चढ़ि [2]चढ़ि गूढ़ मंच अमंच। हक्कि सु हूक चक्किय वंत ॥
नत नुत्त चाप सु इष्य। सरसाइ भू भरतिष्य ॥ छं० ॥ १६ ॥
देह तिसूल सेल [3]सबान। बलि मुष उरवि सेज सजान ॥
वेस निसंक स्यंदन रुढ़। वंकवि कूल रासिव रूढ़ ॥ छं० ॥ १७ ॥
कंपिय कोपि कंप करूर। नांगति गोपि गरनि गरूर ॥
अनुचित लच्छि रघुपति चेत। किंनर नाद नारद केत ॥ छं० ॥ १८ ॥
फिरि परदच्छि दच्छिन देव। त्रिभुवन स्वामि अमित अतेव ॥
हरि हर हर न होरन ताप। निकट निकंठ काटत जाप ॥ छं० ॥ १९ ॥
आसन असन अनल [4]गरूत। रघुपत्ति रघुकुल धूत ॥
धारत धरनि धारनि हेत। सोपन करहु घोरन चेत ॥ छं० ॥ २० ॥
राघव धरन [5]प्रषन प्रचाल। षग सुर गवन कित्ती काल ॥
तजि [6]भज्जि अहि गन बांन। जय जय चंवत सेवग थान ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ तजी तूझ भजि भजि सरै। भजि भजि रघुपति रूढ़ ॥
गोप गोप गर गर [7]गरनि। छिन्न इक गुनपति गूढ़ ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ [8]निसि निसंक स्यंदन सु। वंक कंल कंक तंग लुपि ॥
चढ़िय देव मंडल मरुत्त। आवन्न धूप धुपि ॥
कष्य गोप गहि गोप। डारि' जरन्न अंग लगि ॥

(१) ए. को.-धाइय, छाइय। (२) मो.-बढ़ि। (३) ए. कृ. को.-तिवान।
(४) मो. गत रूत। (५) ए. कृ. को.-प्रसन।
(६) ए. कृ. को.-भति। (७) मो.-सिरनि।
(८) मो.-निकसि संक।

भाष सद्दष म्रग मंकु। सेन भुमि सेन प्रान दगि ॥
जय जयति सद्द नारद चवत। कर किन्नर तारच्छि भजि ॥
तजि पासि पास तन दर बिकर। कहि रघुपति [१]अभ भित्त रजि ॥
छं० ॥ २३ ॥

मेघनाद और कुम्भकर्ण का युद्ध वर्णन।

दूहा॥ भज्जि ताप तन मानि मन। बाल व्याल उड़ि सेन ॥
सोषि स्रोन तद्दिन सरनि। रह्यौ राज बिनु चेन ॥ छं० ॥ २४ ॥
लच्छि राइ भर पंच मिलि। मंडि सरस धनुबान ॥
इंद्रजीत भर अवनि परि। छयौ अमर असमान ॥ छं० ॥ २५ ॥
हय बज्जी दस मुष दरनि। भय मंदोदरि बाम ॥
जाइ जगावहु कुंभ कहुं। हनै रिपुन घन जाम ॥ छं० ॥ २६ ॥
[२]उठ्यौ कुंभ अवनी सु रर। करि जग्गत घन रीस ॥
सुर किंनर धुनि सबद बर। पिष्षहु पग्गन सीस ॥ छं० ॥ २७ ॥
गाथा॥ दानं प्रमद प्रमादं। परयं भर कुंभ बद्धि लासायं ॥
सम गुच्छन धर धारं। चढ़ि चढ़ि अटन रटन [३]रित जेयं ॥
छं० ॥ २८ ॥
विज्जुमाल॥ किलकि दिलकि कूक। भज्ज दनु गन भूक ॥
तजि बह बध्धन थूर। भज्जि सुरगन भूर ॥ छं० ॥ २९ ॥
कहकि कुंभ कनंक। चिहूं दिग्ग बर नंक ॥
मुरि [४]मुरि मेर षंड। जुर छरि जूर भंडि ॥ छं० ॥ ३० ॥
रन रेन छय सूर। मिल कहक वित्तूर ॥
दह दिग्ग जगि अग्य। बर मंस रम लग्य ॥ छं० ॥ ३१ ॥
नचि नचि भय भूत। रमत सुरेस सूत ॥
चव चव [४]सद्दि ताल। भवति भल कराल ॥ छं० ॥ ३२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जुम। (२) ए. कृ. को.-जित।
(३) ए. कृ. को.-मर। (४) ए. कृ. को.-साद्धि।

[१]कुपित कुंभक रष्षि। गरुअ गड्ढ गरषि ॥
थेइ थेइ पुर नाद। वितल उचित माद ॥ छं० ॥ ३३ ॥
प्रगटि [२]दानव दल। प्रलय सम अस मल ॥
गहबर धुन पान। रीस रघु असमान ॥ छं० ॥ ३४ ॥
रिन तत नित्त पंच। तनकि तनकि रंच ॥
उड़ि भर भुज भूर। तरसि [३]मष वक्रूर ॥ छं० ॥ ३५ ॥
पच्छ छिन छिनकंन। करि रघुराय रंन ॥
ऊरध भूरध षंड। मरि कुंभ राइ दंड ॥ छं० ॥ ३६ ॥
समर अंमर ऐन। अवत चवत चैन ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ पऱ्यौ कुंभ धरनी सु धर। षंड षंड तन तेह ॥
मानौं प्रबल सनूर ढरि। चढ़ि पंछी नल छेह ॥ छं० ॥ ३८ ॥
सजि डंबर घन सीस पर। सज स्यंदन [४]षर षेह ॥
चढ़ि दससिर रघुपति विहसि। रहसि बढ़ी रन केह ॥ छं० ॥ ३९ ॥
हल हल सेनन चर चरन। उड़ि आडंबर धूरि ॥
बजे तूर बनचर चमू। देव पंचजन पूर ॥ छं० ॥ ४० ॥

राम रावण का युद्ध।

गीतामालची ॥ मीसद्द नद्दि निसान स्यंदन सेन अंकुरि सेनयं ॥
झिलि रहसि रघुपति राइ रावन गज्जि आनक ऐनयं ॥
थिर भान व्योम विमान निज्जर जच्छि रच्छिन अच्छनी ॥
[५]नग नाग नागिनि पच्छ पंचन मत्त मत्तन [६]वच्छनी ॥ छं० ॥ ४१ ॥
किल किलक काल विताल मालनि व्याल जालन तंडवं ॥
डव डवरु डोरु अ करह किन्नर करत कुंडल षंडवं ॥
मिलि दैत्य वंस अदैत्य अंसह संधि सिंधुर नद्दयं ॥
गन गिद्धि अंबर छाइ पच्छिन डंकि डंकि नरद्दयं ॥ छं० ॥ ४२ ॥
तन तुनकि चामर चाप चंपिय ताप कंपिय तिप्पुरं ॥

(१) मो.-कुषित। (२) ए. कृ. को.-दानव। (३) मो.-सम चंव नूर।
(४) ए. कृ. को.-षन। (५) ए. कृ. को.-गन।
(६) ए. कृ. को.-चच्छनी।

तर तरकि चिक्कुट चक्र चक्किय धक्क पंकिय ईसुरं ॥
उड़ि चक्र स्यंदन चूर चामर प्रेर चव्वर षंडयं ॥
दानव दुरासय पलं आसय समर घन बर मंडयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
धुर सेत पीत सुरंग [1]सातक श्रोन नील अकासयं ॥
जनु जून द्रुज भूभंति अंतर पत्त रिति निल तासयं ॥
परि ह्रर सुरगन चवत-जय सुर अंचि कर मुकतामरं ॥
बढ़ि कंध दस कुल षित्त पंचर बढ्ढि बर रन [2]धूमरं ॥ छं० ॥ ४४ ॥
गिरि गिरिन दस ग्रव सोषि सर खिग रह्यौ राज अभष्ययं ॥
सुरपत्ति मुष अग मंडि जंपिय राम रावन कथ्थयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥

रामचन्द्र जी की उदारता।

दूहा ॥ चवत राज सुरराज सौं। इह रघुकुल ब्यौहार ॥
लेत लंक छिन इक लगी। देत न लग्गी बार ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कहै देवि सुर देव सौं। लंक भभीषन अप्पि ॥
रघुपति से सांई सिरह। तूं किम रही अधप्प ॥ छं० ॥ ४७ ॥

इन्द्र का वचन।

घन तोमर अरि दल अलय। सस्त्र सस्त्र बर मंच ॥
तिन रत चपत न छिन भई। ढबि ढुरि ढुंढि भ्रमंत ॥ छं० ॥ ४८ ॥
अब कनवज दिल्ली बयर। दलन दुअन बांड़ षेद ॥
रुंड मुंड षंडन षलन। विधि बंधी बदि बेद ॥ छं० ॥ ४९ ॥
चंडि बरन पुज्जाइ चिष। मंडि मुंड डर माल ॥
जो कनवज दिल्लिय बयर। भरहि पच रज बाल ॥ छं० ॥ ५० ॥

इन्द्र का एक गंधर्व को आज्ञा देना कि वह पृथ्वीराज और जयचन्द में शत्रुता का सूत्र डाले।

कवित्त ॥ मति प्रधान गंधर्ब। देव दिव राज बुलायौ ॥
कलह करौ भारथ्थ। मत्ति अप्पनी बढ़ायौ ॥
भूमि भार उत्तार। कलह कित्तिय विस्तारौ ॥

(१) ए. कृ. को.-सायक। (२) ए. कृ. को.-धीअरं।

चाहुआन कमधज्ज । बीर विग्रह जग्गारौ ॥
करि कीर रुप कनवज गयौ । उभय द्रिवस दिष्षिय पुरिय ॥
बंभन्निय मदन अंगन सु तरु । निसि निवास तहां उत्तरिय ॥
छं० ॥ ५१ ॥

कन्नौज की शोभा वर्णन ।

श्लोक ॥ सतयुगे काशिकादुर्गे । त्रेतायां च अयोध्यया ॥
द्वापरे हस्तिनावासं । कलौ कनवज्जका पुरी ॥ छं० ॥ ५२ ॥

गंधर्व की स्त्री का उससे संयोग के पूर्व जन्म की कथा पूछना ।

दूहा ॥ गंध्रव त्रिय प्रिय पुच्छि [1]बर । नाथं कथा समुझाय ॥
संजोगिय अवतार कहि । न्रप ग्रह ज्यों [2]जमि आइ ॥ छं० ॥ ५३ ॥

गंधर्व का उत्तर देना कि वह पूर्व जन्म की अप्सरा है ।

राज पुत्रि उतपत्त सुनि । इह अप्छरि अवतार ॥
[3]सुमन श्राप म्रत लोक महिं । हूरन करन संहार ॥ छं० ॥ ५४ ॥

कविचंद का अपनी स्त्री से संयोगिता के जन्मान्तर में शापित होने की कथा कहना ।

सुकी सुनै सुक उच्चरै । पुब्ब [4]संजोय प्रताप ॥
जिहि छर अच्छर मुनि छऱ्यौ । जिन त्रिय भयौ सराप ॥छं०॥५५॥

शिव स्थान पर ऋषि की तपस्या का वर्णन ।

चोपाई ॥ जटा बीर शंकर सिव थानं । गिरिजा गहिर गंग परिमानं॥
साधत रिष्षि तहां जर नाम । गइ दस इंद्र हन्यौ तिन कामं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

श्लोक ॥ त्वचा इन्द्रिय नेत्रस्य, नासा कर्णय जिह्वया ॥
हृदय जंघ सुमासश्च, दस इन्द्रिय पराक्रमं ॥ छं० ॥ छं० ॥ ५७ ॥

(१) मो.-रस । (२) ए. कृ. को.-जम ।
(३) ए. कृ. को.-सुमत । (४) मो.-संजोग ।

एक सुन्दर स्त्री को देख कर ऋषि का चित चंचल होना।

[1]जहं प्रसाद सिव निकट प्रमानं। मनों ईस तहं आतम जानं॥
गुरु मुक्ती थह भम्यौ विसेषं। षिमा नाम एक सुंदरी देषं॥
छं०॥ ५८॥

कवित्त॥ बाल नाल सरिता उतंग। आनंग अंग सुज॥
[2]रूप सु तट मोहन तड़ाग। भ्रम भए कटाच्छ दुज॥
प्रेम पूर विस्तार। जोग मनसा विध्वंसन॥
दुति ग्रह नेह अथाह। चित्त करषन पिय तुट्टन॥
मन विसुद्ध बोहिथ्थ बर। नहि थिर चित जोगिंद तिहि॥
उत्तरन पार पावै नहीं। मीन तलफि लगि मत्त विहि॥छं०॥५९॥

उक्त स्त्री का सौंदर्य वर्णन।

पद्धरी॥ दिष्टी सु दिष्ट विषया कुमारि। जनु लता लोंग कै काम धारि॥
मनमथ बजार मनमथ्थ धाम। मनमथ्थ तड़ाग कै प्रेम [3]वाम॥
छं०॥ ६०॥

जीवनि सु मुक्ति छिन एक रंग। मन मीन फंद जनु चरि अनंग॥
पंचन कितक्कि कुचि इष्ट जानि। रति रचिय सचिय जनु सोभ सानि॥
छं०॥ ६१॥

दिठि दिठ्ठ टरिय नंह नेन चास। चक्कोर चंद जनु अमिय ग्रास॥
देषंत नेन नह चेन अंग। विंध्यौ सु वाम नेनन निषंग॥
छं०॥ ६२॥

स्वर भंग कंप वेपथ्थ पथ्थ। फुरकंत नयन इम भय अवथ्थ॥
पञ्चय समान मन नेन भिंटि। फट्यौ सु दूध मनु छाछ छंटि॥
छं०॥ ६३॥

बद्दल समूह सब गगन छाइ। फट्टे कि जानि छिन छुट्टि बाइ॥
मुरछाइ रह्यौ इम ब्रह्म बाल। व्यापंत सीत जनु तरु तमाल॥
छं०॥ ६४॥

(१) मो.-तहां। (२) ए. कृ. को.-सूप। (३) ए. कृ. को.-वानि।

साटक ॥ जा जीवंत पसार पार सुमती, रत्तं हरी ध्यानयं ॥
षिमया कामय चित्त सित्त षिमया, षिम्रया रसं [१]हद्दयं ॥
सा सुपनंतर दीह रत्त मुषं, प्रानंपि षिमया रुषं ॥
ना सुझ्झै बिय ध्यान [२]पन्नर [३]रुषं, षिमयाय षिमया मुषं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

परंतु ऋषि का पुनः अपने मन को साधकर वदरिकाश्रम पर्य्यंत पर्य्यटन करके घोर तप करना।

गाथा ॥ षिमया सुष मय भ्रमियं। रमयाइ भ्रंग कीटयो मनयं ॥
चित्त नः जिन लषि भुअंगं। सो भिद्देव काम वामाइं ॥ छं० ॥ ६६ ॥

कवित्त ॥ प्रथम तिथ्थ अड़सट्ठि। न्हाय बद्री [४]तप रत्तौ ॥
जठरागनि करि चपत। छुधा निद्रा बस जित्तौ ॥
हिम रित हिम तन तुटहि। पंचगिन ग्रीसम सहयौ ॥
बरषा काल प्रचंड। [५]मेघ धारह बपु [६]बहयौ ॥
कर धूम पान मुष अद्ध रहि। कर अंगुष्ट नर देव हरि ॥
सत बरष ध्यान लग्गै भयौ। जोति चित्त चिहुटी सुहरि ॥
छं० ॥ ६७ ॥

ऋषि के तप का तेज वर्णन और उससे इन्द्र का भयभीत होना।

दूहा ॥ तप बल कंपत सुभर भुअ। रह्यौ ध्यान दिव देव ॥
सुरत्त तेज द्रिग सिथल हुअ। लह्यौ सुरप्पति भेव ॥ छं० ॥ ६८ ॥
तब चिंतिय सुरराज मन। का विचित्र वर वाम ॥
आदि अंत सोधिय सकल। अप्छरि अप्छरि नाम ॥ छं० ॥ ६९ ॥

इन्द्र का अप्सारओं को आज्ञा देना कि वे तेजस्वी तापस का तप भ्रष्ट करें।

(१) मो.-बृज्जयं। (२) कृ.-पडर।
(३) ए. कृ. को.-दृग। (४) ए. कृ. को.-पति।
(५) ए. कृ. को.-मेय। (६) ए. कृ. को.-सहयौ।

बोलि घृताची मेनिका। रंभ उरबसी रुप॥
जानि सुकेस तिलोत्तमा। मंजुघोष सुनि भूप॥ छं०॥ ७०॥
अति आदर आदर कियौ। कह्यौ आप इह बैन॥
छलह सुमंतन जाइ के। रहै राज सुष चैन॥ छं०॥ ७१॥

अप्सराओं का सौंदर्य्य वर्णन।

गाथा॥ नयनं नलिन नवीनं। गवनं गयं मत्त तुलायं॥
बैनं पर ष्रत दीनं। झीनं कट्टि ष्रगं राजेसं॥ छं०॥ ७२॥
अर्थ्या॥ *सपत सुर गान निपुना। न्रत्य कला कोटि आलया मानं॥
तार तरलेव भ्रमरी। भ्रमरी भ्रमरी सय सयसं॥ छं०॥ ७३॥

मंजुघोषा का सुमंत ऋषि को छलने के लिये मृत्यु लोक में आना।

कवित्त॥ भो आयसि सुरराज। मंजुघोषा सुनि बत्तिय॥
म्रत्य लोक में जाहु। सुमति छल छलौ तुरत्तिय॥
दुसह तेज को सहै। मोहि आसन डर डुल्लिय॥
सेस संकि कलमलिय। नेन तिय तालिय षुल्लिय॥
जल षंचि सुरन हिय दुष्ष धरि। गहिन सु रस उड़गन भुअन॥
तप ताप देव सब कलमलत। सुकज काज रष्षहि दुअन॥
छं०॥ ७४॥

दूहा॥ षग षगपति आसन ग्रह्यौ। गए बित्ति बहु काल॥
रंभ षिमा सम रूप धरि। आय [1]सपत्ती ताल॥ छं०॥ ७५॥
मानि बैन सुरराज लिय। नरपुर पत्तिय आइ॥
जहं ताली लग्गी सुमति। तहं नूपुर बज्जाइ॥ छं०॥ ७६॥

मंजुघोषा का लावण्य भाव विलास और शृंगार वर्णन।

अच्छरि अट्ठ विमान [2]बनि। कुसुम समान सरीर॥
नग जगमग अंग अंग सुबनि। कनक प्रभा दुति चीर॥ छं०॥७७॥

* छन्द ७३ मो.-प्रति में नहीं है।
(१) ए. कृ. को.-संपतौं। (२) ए. कृ. को.-रचि।

नराज ॥ बनी विमान कामिनी । मनों दिपंत दामिनी ॥
दुती उपंम लोभयं । कि इंद्र चाप सोभयं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
उरंबसी सु केसयं । तिल्लोत्तमा सुदेसयं ॥
सु मंजुघोष रंभयं । घृताचि मेनका सुयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
सुरंग अंग सोहनी । मनों कि अष्ट सोहनी ॥
मुसक्कि मंद हासयं । विगास कौल भासयं ॥ छं० ॥ ८० ॥
सु नेन डोल भौंरही । कि कौंल भौंर भौंरही ॥
तिहाइ भाइ ठानही । जुगिंद चित्त [1]भानही ॥ छं० ॥ ८१ ॥
मरोरि अंग मारहीं । सकेलि सुद्ध सारहीं ॥
विलास नेन लग्गवै । तिमुच्छि काम जग्गवै ॥ छं० ॥ ८२ ॥
विराज मान मोहनी । सु कौंल माल सोहनी ॥
चवंत बेन माधुरी । न कोकिला सु माधुरी ॥ छं० ॥ ८३ ॥
प्रवीन कोक केलयं । कुकी कुकेकि केलयं ॥
सुभाय वास अंग की । सुगंध [2]गंध भंग की ॥ छं० ॥ ८४ ॥
विमान छंडि उत्तरी । मनों कि चित्र पुत्तरि ॥
सुमंत सुष्प ठट्ठियं । प्रवान पान [3]पट्ठियं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
दिषत मेंन लग्गयं । जिह्राज जोग भग्गयं ॥ छं० ॥ ८६ ॥

अप्सरा के गान से ऋषि की समाधि क्षणेक के लिये डगमगाई।

दूहा ॥ करिय गान विविधान सुर । ताल काल रस भाइ ॥
छिनक पलक मुष उग्घरियं । अच्छरि रही लजाइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

अप्सरा का शंकित चित्त होकर अपना कर्त्तव्य विचारना।

उलटि गयै सुरपति हंसै । [4]रहैं रषीस रिसाइ ॥
इह चिंता मन उप्पज्जिय । फिर दिव लोक सुजाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥
जौं न छरौं तौ देव डर । रिषि तप जप्प प्रचंड ॥
[5]दुहुं विधि संकत कामिनी । आप ताप सुर दंड ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) ए. कृ. को.-तानहीं । (२) ए. कृ. को.-भंग ।
(३) ए. कृ. को.-ठट्ठियं ।
(४) मो.-रह रिषि भाय रिसाय । (५) मो.-दादु विधि संक न सामिंन ।

उलटि गई सुर घरनि घर। देवन देव बुलाइ ॥
इंद्र रोस कै डर डरौ। श्राप ताप डर पाइ ॥ छं० ॥ ९० ॥

तब तक ऋषि का पुनः अखंड रूप से ध्यानमग्न होना।

मन माया भ्रम दूरि करि। फिरि लग्यौ रिषि ध्यान ॥
ब्रह्म जोति प्रगटी उरह। रंस प्रगट्टिय आन ॥ छं० ॥ ९१ ॥

मुनि की ध्यानावस्थित दशा का वर्णन।

कवित्त ॥ बहुरि गई रिषि पास। सांस जिन गहिय उरध गति ॥
मूल पवन द्रिग बंधि। गरजि ब्रह्मंड मेघ अति ॥
बंक नाल जल षंचि।[1]सींचि उर कमल प्रफूल्लिय ॥
ब्रह्म अगनि प्रज्जरिय। पाप करि भसम समूल्लिय ॥
तब मारग सुज्झौ मीन जल। पंछि षोज पायौ सगुन ॥
सुनि तार सु बज्जै करन बिन। सद्द स्वाद छंडिय त्रिगुन ॥छं०॥९२॥
तालिय लग्गिय ब्रह्म। लीन मन जोति जोति मलि ॥
कमल अमल उघ्घरिय। हृदय अवनीय धरनि [2]अलि ॥
त्रिकुटिय ताटंक लग्गि। भ्रगुटि गंगा तन मंडिय ॥
रिष्षि सवद्द श्रवन्न। नद्द अनहद्द सु बज्जिय ॥
अधमुष ऊरध चरन करि। गति पत्तिय मंडल गगन ॥
ता रिषहि जगावत सुंदरिय। रह्यौ सु धुनि मभ्भह गगन ॥
छं० ॥ ९३ ॥

वाद्य बजना और अप्सरा का गाना।

दूहा ॥ जंच मृदंग उपंग सुर। धुनि झंझर झनकार ॥
करत राग श्रीराग सुर। कर बर बज्जत तार ॥ छं० ॥ ९४ ॥
चट्टु वात माठा धुआ। गीत प्रबंध प्रवीन ॥
[3]उघटत ललिता ललित पिय। पुजवति सुर कर बीन ॥छं०॥९५॥

(१) ए. कृ. को.-सिंचि कम्मर उर फूलिय।
(२) ए. कृ. को.-उर। (३) ए. कृ. को.-उघटन।

श्लोक ॥ [1]मृदंगी दंडिका ताली । धुरधुरी स्तुति काहली ॥
गीत राग प्रबंधं च । अष्टांगं नृत्य उच्यते ॥ छं० ॥ ९६ ॥

मुनिका समाधि भंग होकर कामातुर हो, अप्सरा के आलिङ्गन करने की इच्छा करना ।

दूहा ॥ सोर सुरनि के सुर जग्यौ । भंग्यौ ध्यान जगईस ॥
चित्त चकित करि सोच मन । इह अपुब्ब कहा दीस ॥ छं० ॥ ९७ ॥
नूपुर धुनि श्रवननि सुनत । भई ध्यानगति पंग ॥
ताली छुट्टिय गगन मय । षुल्लिय पलक मन लग्ग ॥ छं० ॥ ९८ ॥
कहिय रिष्य सुर अप्छरी । कन्या गंध्रब जक्ष ॥
कै नागिनि जनमी कुआरि । तो सिंव [2]रष्या रक्ष ॥ छं० ॥ ९९ ॥

अप्सरा का अन्तर्ध्यान हो जाना ।

कमातुर चिय कर ग्रह्यौ । तप जप छंडिय आस ॥
[3]हँसि छुड़ाइ कर तड़ित मन । गई अवास अयास ॥ छं० ॥ १०० ॥

मुनि का मुर्छित हो जाना, परंतु पुनः सम्हल कर ध्यानावस्थित होना ।

छिन इक धर मूरछि पर्यौ । चित कलमल्यौ अधीर ॥
बहुर ग्यान मन आनि कै । मुनि वर भयौ [4]सधीर ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवित्त ॥ फिरि उत्तरि मन धर्यौ । हेमगिरवरह ध्यान धरि ॥
चित्त ब्रह्म लवलीन । बरष सित कियौ तेम करि ॥
छुधा पिपासा जीति । नींद निसि नसिय इंद्रि तस ॥
बहुत जतन तप कियौ । बंधि दृढ़ पवन उरध बस ॥
पीवंत वाम दक्षिन सुचै । कुंभक पूरक जोग बल ॥
करि उर्द्ध चरन ध्यान सु रह्यौ । गह्यौ पंथ गगनह अकल ॥
छं० ॥ १०२ ॥

(१) मो.-मृदंकी ।   (२) मो.-रछ्या ।
(३) ए. कृ. को.-सहि ।   (४) ए. कृ. को.-अधीर ।

कविचन्द की स्त्री का अप्सरा के सौंदर्य्य के विषय में जिज्ञासा करना।

दूहा॥ सुकी सुकह पुच्छै रहसि। नष सिष बरनहु ताहि॥
जा दिष्षन मुनि मन टर्‌यौ। रह्यौ टगट्टग चाहि॥ छं०॥ १०३॥

अप्सरा का नख सिख वर्णन।

साटक॥ चरने रत्तय पत्त राइ रितए, कंजाय [1]चंद्रानने॥
मातंगं गय हंस मत्त गमने, जंघाय रंभाइने॥
मध्यं छीन म्रगेन्द्र भार जघना, नाभिंच कामालए॥
सिंभे सिंभ उरज्ज नयनयौ, एने ससी भालयौ॥ छं०॥ १०४॥

अर्धमालची॥ तल चरन अरुनति रत्तए। जल नलिन सोक सपत्तए॥
नष पंति कंतिय मुत्तए। जनु चंद अग्रत जुत्तए॥ छं०॥ १०५॥
भग जरति नूपुर बज्जए। कलहंस सबद विलज्जए॥
गति मत्त गरव गयंदए। छबि कहत कविबर चंदए॥ छं०॥ १०६॥
गहि पिंड कनक विमानयं। रंग रंग बंदन सानयं॥
कर करिय जंघति ओपमं। रंग फटिक केसरि सोपमं॥छं०॥१०७॥
घन जघन सघन नितंबयं। छिन काम केलि विलंबयं॥
कटि सोभ बर म्रग राजयं। कहि चंद यौं कविराजयं॥छं०॥१०८॥
बनि नाभि कोस सुकज्जयं। मनु काम भ्रमरय रंजयं॥
रव मधुर म्रदु कटि किंकिनी। झलमलत नग फननी [2]कनी॥
छं०॥ १०९॥

सलि उदर त्रिबलि त्रिरेषयौ। कुच जघन मंडि सु भेषयौ॥
बनि रोमराजि सपंतयं। प्रतिबिंब बैनि सुभंतियं॥ छं०॥११०॥
उर उरज जलज बिराजही। फलधूत श्रीफल लाजही॥
उर पुहप हार उहासियं। इक होत जोजन वासियं॥छं०॥१११॥
गर लजति कंठतु कामिनी। कलयंठ कोक सुधामिनी॥
रुचि चिबुक बिंद सु स्यामए। जनुं कमल बसि अलि धामए॥छं०॥११२॥

(१) मो.-चन्द्रायने। (२) मो.-कली।